अंक : जुलाई-सितम्बर, 2022

रजि. नं. 31319/77

ISSN : 2320-0995

राजस्थली

भासा, साहित्य, संस्कृति अर लोक चेतना री राजस्थानी तिमाही

सम्पादक
श्याम महर्षि

स्थापना : 1977
राजस्थली

प्रबन्ध सम्पादक
रवि पुरोहित

लोकचेतना री राजस्थानी तिमाही

राजस्थली

जुलाई-सितंबर, 2022

बरस : 45 अंक : 4 पूर्णांक : 156

संपादक
श्याम महर्षि

प्रबंध संपादक
रवि पुरोहित

प्रकाशक
मरुभूमि शोध संस्थान
(राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति, श्रीडूंगरगढ़ 331803)
www.rbhpsdungargarh.com
e-mail : rajasthalee@gmail.com

आवरण
वर्षा राजपुरोहित, जोधपुर
मो. : 9929860819

रेखाचित्राम
चेतन औदिच्य, उदयपुर
मो. : 9602015389

ग्राहक शुल्क

पांच साल : 1000 रिपिया, आजीवण : 2500 रिपिया, संरक्षक सदस्य : 5100 रिपिया

Phone Pay / Google Pay / Paytm : 9414416252

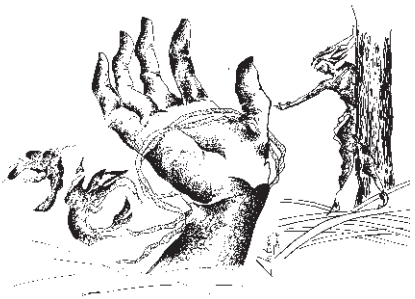

इण अंक में

संपादकीय

किन्नरां नै मुख्य धारा सूं जोड़ण री जरूरत — *श्याम महर्षि* — 3

शोध आलेख

किन्नरां रो लोकजीवण अर संस्कृति — *डॉ. विजय कुमार पटीर* — 4

कहाणी

पंदरा बरस पैली — *राजेन्द्र शर्मा मुसाफ़िर'* — 18

टेणां रै ढाळै में स्कूल — *चेतन स्वामी* — 24

रणछोड़ — *किरण राजपुरोहित 'नितिला'* — 31

पाप — *एस.एस. पंवार* — 36

कविता

हूंस / प्रीत — *मंजू शर्मा जांगिड़ 'मनी'* — 40

आत्म विवेचन — *कल्याण सिंह शेखावत* — 41

थे पैल्यां चलग्या सुख पाया / तूं जायां मुस्कल हो ज्यासी — *गौरीशंकर शर्मा 'भावुक'* — 42

हाइकु

इक्कीस हाइकु — *डॉ. शंकरलाल स्वामी* — 45

दूहा

रंग रा दूहा — *रतनसिंह चांपावत (रणसी)* — 47

किन्नरां नै मुख्य धारा सूं जोड़ण री जरूरत

वरतमान मांय किन्नर-विमर्श माथै साहित्य जगत मांय मोकळो काम होय रैयो है। राजस्थानी साहित्य में भी आं बरसां में किन्नर-विमर्श माथै केई रचनावां साम्हीं आयी है। परलीका सूं प्रकाशित हुवण वाळी 'कथेसर' पत्रिका इण विसय माथै अेक विशेषांक भी निकाळ्यो है। किन्नर-कथा नै लेय'र 'हथाई' रा संपादक भरत ओळा रो 'बेलिंगी' नांव सूं राजस्थानी में अेक उपन्यास भी लारलै बरस छप्यो है, तो संतोष चौधरी रै कहाणी-संग्रै 'काया री कळझळ' री सिरैनांव कथा 'किन्नर-विमर्श' नै लेय'र ईज है।

किन्नरां रो उल्लेख आदिकाळ सूं मिलै। पौराणिक ग्रंथ 'रामायण' अर 'महाभारत' रै सागै तुलसीदासजी रै 'रामचरितमानस' अर सूरदासजी रै 'सूरसागर' मांय ई किन्नरां रो वरणन देखण नै मिलै। अैड़ो नीं है किन्नर फगत हिन्दू धरम में ईज हुवै। दुनिया रै किणी भी धरम मांय किन्नर जलमता रैया है अर बै आप-आपरै धरमां नै मानै अर बांरी आप-आपरी राह-रीत है। 'राजस्थली' रै इण अंक मांय डॉ. विजय कुमार पटीर रो शोध आलेख 'किन्नरां रो लोकजीवण अर संस्कृति' दिरीज्यो है, जिण मांय किन्नर-जीवण री पुरसल जाणकारी आपनै मिलसी। आगै भी राजस्थली इण भांत रा आलेखां नै ठावी ठौड़ देयसी।

भारतीय समाज मांय अेक कानी जठै जलम अर ब्याव रै सागै बीजा सुभ अवसरां माथै किन्नरां रो आवणो अर बधाई मांगणो सुभ मानीजै, बठै ई आडै दिनां आपां आंनै हेय दीठ सूं देखां, जिको आपणी दोगली मनगत नै दरसावै। आपरी लगोलग उपेक्षा अर अणदेखी रा सिकार नूंवी पीढी रा किन्नर अबै रूढिगत गाणो-बजाणो छोड'र पढणै-लिखणै अर समाज री मुख्य धारा में आवण सारू पूरी खेचळ कर रैया है। राजनीति, धरम, साहित्य अर सांस्कृतिक खेतर मांय ई अबै अै आपरी दखल राखै। इण वास्तै आज किन्नरां नै देस अर समाज री मुख्य धारा सूं जोड़ण री जरूरत है।

—श्याम महर्षि

डॉ. विजय कुमार पटीर

किन्नरां रो लोकजीवण अर संस्कृति

हरेक जाति, धरम अर देस री संस्कृति न्यारी होवै। जे किन्नरां री संस्कृति री बात करां तो आंरी संस्कृति सै सूं न्यारी ई है। संस्कृति मांय बै सगळा तत्त्व सामल होवै जका अेक मिनख नै मिनख बणावै। किन्नरां री आपरी भासा न्यारी है। बै आपरै डेरै अर समाज मांय केई इस्या सबद बोलै जकां रो मतलब बै ईज जाणै। आंरो खाणो-पीणो भी सामान्य सूं घणो न्यारो तो नीं होवै, पण आपां आंनै साधु-संतां री स्रेणी मांय राखतां थकां आंनै सरभंगी भी बोल सकां। जका स्वाद सूं कीं मतलब नीं राखै। जिस्यो मिल जावै बो ई खा लियो, जिस्यो मिल जावै बो ई पैहर लियो। पण आजकल किन्नर भी घणा साफ-सुथरा रैवण लागग्या है। मांस अर दारू रो चलन तो आं रै डेरां मांय होवै, पण सारा किन्नर दारू कोनी पीवै। सारा किन्नर मांस कोनी खावै। अै भी नेम-धरम निभावै। बार-तिंवार नै मानै। आज आम आदमी रो भोजन ई आंरो भोजन है। अै जांत-पांत कोनी देखै। भारतीय संस्कृति रा सारा रीति रिवाज निभावै। होळी-दियाळी मनावै। आपरै पति खातर करवा चौथ राखै। आंरी बेसभूसा चटकीली अर भड़काऊ होवै। अै गैणां-गांठां सूं लद्या रैवै। अै मैकअप करयोड़ा घणा फूटरा लागै। किन्नर सदां ई बण्या-ठण्या रैवै। आंरी संस्कृति भारतीय संस्कृति मांय आपरी महताऊ ठौड़ राखै। अै भी सांस्कृतिक अेकता अर देस नै आगै बधावण मांय घणो योगदान देवै। अजै तांई आंरो कोई लिखित लोकसाहित्य साम्हीं नीं आयो है, पण अेक-दो गीत आम घरां सूं अलग होवै। बाकी आंरा गीत-संस्कार सामान्य घरां सूं ईज संबंध

राजकीय छात्रावास रै साम्हीं, वार्ड-16, रावतसर, जिला-हनुमानगढ़ (राज.) 335524 मो. 8107123197

 ISSN : 2320-0995

राखै। अै भी देवी-देवतावां री रातां जगावै अर गीत गावै। किन्नर भी आपरै धरम मुताबिक सारा काम करै। आंरी संस्कृति लोकजीवण पर आधारित है। अै जकै गांव, स्हैर, जाति, धरम, संप्रदाय, वरग मांय रैवै बीं री संस्कृति नै अपणा लेवै। देख्यो जावै तो भारतीय संस्कृति रै सारा अंगां नै अपणाय'र अै आपरो घणो जोगदान देवै। पण फेर भी आंनै समाज मिनख री मानता कोनी देवै। आज आपां नै आ बात स्वीकार करणी पड़सी कै अै भी आपणी संस्कृति रा अेक हिस्सा है जका आपणी संस्कृति नै बचावण खातर घणो जोगदान देवै। आंरी लोक कला 'ताळी' ईज आंनै आपणी संस्कृति सूं न्यारा करै।

किन्नरां रो लोकजीवण आम समाज सूं घणो न्यारो तो नीं होवै, पण फेर भी आं रै समाज मांय केई इसी मान्यतावां अर परंपरावां, गीत, लोकभासा मिलै जिणसूं सूं अै आपणै समाज सूं कीं न्यारा हो जावै। अजै तांई किन्नर समाज रो लोकसाहित्य या लोकजीवण लिख्यो नीं गयो है। अठै आपां ईं शोध आलेख मांय किन्नरां रै लोकजीवण अर संस्कृति रो विस्लेसण करण री खेचळ करस्यां।

(1) किन्नरां री मान्यतावां अर परंपरावां

हरेक समाज अर संप्रदाय मांय आपरी मान्यतावां अर परंपरावां बण्योड़ी होवै। अै परंपरावां अर मान्यतावां जूनै काळ सूं चालै। किन्नर संप्रदाय मांय भी मोकळी परंपरावां अर मान्यतावां मिलै। हींजड़ा जद बधाई पर जावै तो साम्हीं आंनै जद कोई हींजड़ो, बाल्मीकी (भंगी) या भरयोड़ो घड़ो मिल जावै तो अै बीं नै सुभ मानै। ईं रै अलावा जे आंनै लखारो मिल जावै तो अै बीं नै भी सुभ मानै। जको किन्नर ईं संसार नै छोड देवै, मर जावै तो बीं री जोत-बाती बृहष्पतिवार नै होवै। किन्नर खुशी रै मौकां पर ई घरां मांय जावै, पण मातम पर अै कोनी जावै। हां आस-पड़ौस अर भाई-बेली-रिश्तेदार रै घर मांय जे मातम होवै तो अै बैठण नै जावै। हींजड़ै रै हाथ मांय चूड़ी अर नाक मांय कोको होवणो जरूरी है। जद हींजड़ा अेक-दूजै सूं मिलण नै जावै तो बांरो घणो आदर मान होवै। बांनै भोजन करायो जावै अर जांवती बगत रिपिया भी देवै। जे कोई राह चालतो किन्नर भी डेरै मांय आ जावै तो बीं नै चाय-पाणी पावै अर रिपिया देय'र ब्हीर करै। ईं रिपिया देवणै नै राहदारी कैयो जावै अर डेरां मांय आवण आळा किन्नर मेहमान कैया जावै। डेरा रा गुरु, मालिक या नायक डेरेदार कैया जावै। दिनूगै जद किन्नर बधाई लेवण नै जावै तो माता री धोक देय'र, वंदना कर'र जावै। आपरै गुरु सूं आग्या लेय'र, पगां रै हाथ लगाय'र बधाई लेवण डेरै सूं निकळै। हींजड़ा जकै घर मांय बधाई मांगण जावै, बीं घर मांय लाग्योड़ा फूलां नै कदैई कोनी तोड़ै। बधाई रो समान ल्यावै अर बीं नै भंडार मांय राखै। [1]

किन्नर आपरै गुरु रै वास्तै करवा चौथ भी राखै। जे किन्नर किणी नै खुशी सूं रिपिया देय देवै तो बां रिपियां नै आपरी अलमारी मांय राखणा चाईजै। ईं सूं बरकत मिलै, आ भी अेक मान्यता है। भारत मांय जका लोग पुराणा गाभा लेय'र नूंवा भांडा बेचण रो कारज करै, बीं जात रा लोग हींजड़ां रा पग परसै। ईं जात री या भांडा बेचण आळी लुगायां

हींजड़ां नै देखतां ई ओलो (घूंघट) काढ लेवै अर पगां रै हाथ लगावै। दरअसल अै लोग किन्नर नै माता मानै। [2]

जिण लुगाई रै टाबर या छोरो कोनी होवै बीं नै किन्नर गेहूं अर चावळ रै दाणां रै साथै ग्यारहा रिपिया देवै। बै मन-ई-मन मांय आपरै भगवान नै सिंवर'र अै दाणा अर रिपिया लुगाई नै देवै। बा लुगाई आं दाणां अर रिपियां नै साफ-सुथरै गाभां मांय बांध'र आपरै घर, मिंदर या साफ जगां मांय छोड देवै। ईं नै गोद भराई कैयो जावै। डेरै मांय आयोड़ै मेहमान (हींजड़ै) नै जावती बगत राहदारी रिपिया रै रूप मांय देयी जावै। अै रिपिया डेरेदार आपरी चूड़ियां या हाथ मांय पैरयोड़ी चूड़ियां रै लगाय'र देवै। सामान्य समाज मांय भी आ धारणा है कै कोई किन्नर खुश होय'र रिपिया दे देवै तो बुधवार नै बां रिपिया नै आपरै बटुअै मांय राखण सूं बरकत मिलै। [3]

जका खेतर, इलाका मांय अै बधाई मांगै बीं नै बिरत कैवै। जका घरां मांय बधाई मांगण जावै, बीं घरआळा अेक तय रिपिया या चीज देवण री बात करै या हींजड़ा जे जादा ऊंच-नीच करै तो बांरी बधाई तय कर देवै। ईं नै लाग बांधणो कैवै। [4]

किन्नर आपरै डेरै मांय गागर भी राखै। गागर पुराणा डेरादार राखै। गागर अेक तिजोरी ई होवै। दरअसल मटकै (घड़ो) या टोकणी नै गागर कैयो जावै अर बीं रै मूंडै पर अेक लोटो राख्यो जावै। ईं नै सुंणी सजाई जावै। आ गागर जद भी खुलै बीं मांय रिपिया गेरणा जरूरी होवै। खाली गागर रो मूंडो कोनी खोल्यो जा सकै। ईं गागर नै साल मांय अेकर ई पूर्णमासी रै दिन खोल्यो जावै। ईं नै गल्लो भी कैयो जावै। [5]

ईं रै आलावा भी किन्नरां री केई परंपरावां होवै। आं रै डेरां मांय अेक पानदान अर गालदान भी होवै। पानदान मांय सात तरियां री चीजां होवै-सुपारी, कत्थो, पान, इळायची, चूनो, सौंफ आद। डेरां मांय आयोड़ै मेहमान नै अै पानदान देवै। मेहमान बीं मांय सूं पान खावै। गालदान थूकण या बीड़ी रा टोटका गेरण रै काम आवै। गालदान री अेक कहाणी भी मिलै, बां इयां है—

अेक दिन अेक वेश्या (कंजरी) री गुंडा इज्जत लूटण लागरया हा या बीं री इज्जत लूटण री कोसिस करण लागरया हा। बीं टेम अेक हींजड़ै आय'र बीं कंजरी री इज्जत बचाई अर गुंडा नै भजा दिया। बा कंजरी ईं हींजड़ै नै आपरी भैण बणा ली। बा ईं हींजड़ै नै आपरै कोठै ऊपर लेयगी। बठै हींजड़ै ईं गालदान रै बारै मांय पूछ्यो तो औ गालदान कंजरी आपरी ईं भैण नै उपहार स्वरूप देय दियो।

जद किन्नर-डेरै मांय दूजो किन्नर मेहमान रै रूप मांय आवै तो बीं री आवभगत करी जावै अर होको-पाणी दियो जावै। भारतीय हिन्दू संप्रदायां मांय साढ़े बारह पंथ मान्या जावै। इण मांय आधो पंथ (बाकी रा बारा पंथां नै छोड'र) किन्नरां रो मान्यो जावै। [6]

(2) किन्नर रो बचपन, जवानी अर बुढापो

किन्नरां रो बचपन आं रै मां-बाप रै घरां ईज बीतै। केई बरियां अै किन्नर नै बचपन

मांय ई आपरै डेरै मांय ले आवै अर बीं नै डेरै री शिक्षा बचपन सूं ईज देवणी सरू करै। हालांकि किन्नर रो बचपन आपरै मां-बाप रै घरां केई बारी घणो दोरो गुजरै। गळी-मोहल्लै सूं भी अपमान सेवणो पड़ै अर घरआळा भी आंनै इत्ता चावै कोनी। कम ई किन्नर पढै-लिखै। क्यूंकै मां-बाप भी समाज सूं डरता आंनै स्कूल कोनी भेजै। बाळपणै मांय ईज आंनै ईं बात रो अैसास करवा दियो जावै कै थे म्हारै समाज सूं न्यारा जीव हो। थांनै ईं समाज मांय रैवण रो कोई अधिकार नीं है। पैलां तो जद किन्नरां नै औ ठाह चालतो कै फलां रो टाबर किन्नर है तो बै जबरदस्ती बांनै ले जावता या टाबर बाद मांय भी किन्नर समाज मांय मिल जावता पण अबै टाबरां नै जबरदस्ती कोई नीं ले जा सकै। अठारह-बीस साल रो इंसान आज रै समै मांय खुद ई किन्नर लछण होवतां थकां अपणै आपनै किन्नर समाज नै सूंप देवै। देख्यो जावै तो आंरी जवानी भी घणी दोरी बीतै। अै ताळी मार घर-घर मांगण जावै। अबै सोचण आळी बात आ है कै आज रै समै मांय कुण इस्यो है जको जवानपणै मांय ताळी मार बधाई मांगतो फिरै। आंरी सारी जवानी ईं बधाई मांगणै मांय ई गुजरै। जवानी रै बाद सरू होवै आंरो बुढापो। आंरो बुढापो घणो दोरो है। अेक गुरु रा चेला ईज बुढापै मांय गुरु री सेवा करै। बै बुढापै मांय आपरै गुरु नै अेक तय धन (रिपिया) भी देवै, बीं सूं बो गुरु आपरी जिंदगी आसानी सूं काट लेवै। जे गुरु रा चेला गुरु री सेवा नीं करै तो गुरु पंचायत कर चेला कनै सूं आपरा गाम पूठा लेय सकै। बांनै जात-बिरादरी सूं बारै भी कर सकै। किन्नर रूखै स्वभाव रा होवै, जकां नै आपां इकलखोरिया भी कैय सकां। अेक इस्यो केस भी साम्हीं आयो है कै जे कोई गुरु रो चेलो नीं होवै या चेला काम रा नीं होवै तो अै किन्नर बुढापै मांय सेवा खातर किणी सामान्य मिनख नै गोद ले लेवै अर आपरो सारो लुगो-तुगो बीं रै नांव कर देवै। जकै गामां मांय किन्नर बधाई मांगतो बै गाम भी अेक सामान्य मिनख नै लिख'र दे जावै कै म्हारै मरणै रै बाद म्हारा सारा गामां मांय औ सामान्य मिनख बधाई मांगसी। गाम बणी, तहसील राणिया, जिला सिरसा मांय मुखत्यार नांव रो अेक हींजड़ो हो। बो अेक सामान्य मिनख आलम नै गोद लियो हो। माई मुखत्यार जद बूढी होयगी, बीमार पड़ी तो आलम बीं री घणी सेवा-चाकरी करी। माई मुखत्यार आपरो सारो धन अर बधाई मांगण आळा गाम आलम रै नांव कर दिया। माई मुखत्यार रै मर्‌यां पछै औ आलम बां गामां मांय बधाई मांगण लागग्यो। आलम बधाई मांगण खातर आपरै साथै हींजड़ां नै भी राखतो। अै हींजड़ा किरायै पर आवता। आ बात भी कैयी जावै कै औ आलम ले रै जोर सूं गामां मांय बधाई मांगी। आलम आपरी माई रो पुराणो घर बेच दियो। औ आलम सादीसुदा हो, ईं रै टाबर भी हा। आलम रै मर्‌यां पछै गाम मांगण री विरासत टाबरां रै हाथां सूं निकळगी, क्यूंकै माई मुखत्यार गाम मांगण री विरासत आलम नै सूंपी ही। आलम माई री खूब सेवा-चाकरी करी ही। पण आलम रै बाद हींजड़ां री पंचायत हुई अर अबै अेक सामान्य मिनख री जगां अेक किन्नर ई बणी आद गामां मांय बधाई मांगै।

जे चेला सावळ नीं होवै तो किन्नर-गुरु रो बुढापो घणो दोरो बीतै। हालांकि गुरु किन्नर कनै माल-मत्तो मोकळो होवै, पण केई बरियां वारिस ढंग रो नीं होवण री वजह सूं आंरो बुढापो दोरो बीतै। जे चेला ढंग रा होवै तो किन्नर गुरु घणी सोरी सांस लेवै। राजी-खुशी आपरी दौलत, आपरा गाम चेलां मांय बांट देवै। अै गुरु किन्नर बुढापै मांय तीरथ जातरा भी करै, दान-पुन्न भी घणा करै।[7]

(3) सराप अर आसिरवाद

सामाजिक मानता आ है कै लोग किन्नरां रै सराप सूं घणा डरै। पण असली किन्नर कदैई किणी नै सराप कोनी देवै। असली किन्नर नै जियां लोग दे देवै बो बियां ईज लेय लेवै। किणी रै साथै जोर-जबरदस्ती कोनी करै। पण केई बरियां छोर-छंडा मजाक चढ जावै तो आं रै ई बेबसी हो जावै। बाकी आं रो माहौल भी रुखतोड़ रो होवै। गाळी आद तो आं रै मूंडै पर ईज रैवै। अै कदैई किणी रो बुरो नीं सोचै, ना कदै बुरो करै, ना कदै किणी नै बुरी बात कैवै। ईं रै बाबत आं री अेक सोच आ भी है कै जे म्हे आंनै (सामान्य मिनख / समाज नै) सराप देवण लागग्या तो म्हांरो पेट कुण भरसी? म्हैं तो समाज कनै सूं मांगां हां, बां रो भलो ईज चावां, बांरो कदैई बुरो कोनी सोचां।

कैयो जावै कै जे किन्नर किणी नै ई आसिरवाद देय देवै तो बो जरूर फळापै। लोग आंनै माई, महंत, गुरु कैवतां थकां आं रै पगां रै हाथ लगावै अर आसिरवाद भी लेवै। खुशी रै मौकै पर केई लोग तो खुद आंनै बुलावै अर राजी करै। अै आपरै जजमान नै घणो आसिरवाद देवै।

(4) किन्नर रा देवी-देवता

किन्नर सारा धरमां मांय होवै। अै आपरै धरम रै मुताबिक भगवान, अल्लाह, वाहे गुरु अर जीसस नै मानै। मुसळमान किन्नर नमाज पढै अर फकीरां री दरगाह पर भी जावै। अै भी बहुचरा देवी नै मानै। हिन्दू किन्नर बहुचरा देवी नै मानै, साथै हिन्दू धरम रा सारा देवी-देवतावां नै मानै। अै पीर-फकीरां नै भी मानै। अै बहुचरा माता री रात जगावै अर खुशी रै वास्तै चौरावां मांय कुकड़ छोडै। मुरगै आळी माता री रात मंगळवार नै जगाईजै। माता रै गुलगुलां री कड़ायी करी जावै। किन्नर माता रै गुलगुला, छोला-पूरी, नारेळ अर फळ-फ्रूट चढावै।

तमिलनाडु रै विल्लूपुरम् जिलै रै कुवागम गाम मांय हर साल अेक उच्छब अर सम्मेलन होवै। औ स्थान किन्नरां रो तीरथ स्थल मान्यो जावै। ईं उच्छब मांय देस भर सूं किन्नर भेळा होवै। नूंवै साल री पैली पूर्णिमा नै सरू होय'र औ उच्छब अठारह दिनां तांई चालै। ईं मिंदर मांय अरावन रै सिर री पूजा होवै। अै अठै भेळा होय'र अरावन कथा कैवै, गीत गावै, नाचा-कूदी करै। 17वैं दिन पुरोहित मिंदर मांय पूजा करै। किन्नर अरावन सूं ब्याव करै, बीं रै नांव रो मंगळसूत्र पैहरै। अठै किन्नरां रो ब्याव अरावन री मूरति सूं होवै। अठारवैं दिन सारै गाम मांय अरावन री मूरति नै घुमायो जावै। फेर ईं मूरति नै तोड़ देवै।

किन्नर जको मंगळसूत्र पैहरै बीं नै 'थाली' कैयो जावै। अठारवैं दिन अै बीनणी बण्योड़ा किन्नर आपरो मंगळसूत्र तोड़ देवै, सिंगार मिटा देवै। दूजै दिन वापस विधवा हो जावै। आपरी चूड़ी फोड़तां थकां अै किन्नर घणो विलाप करै। अरावन री मौत अर किन्नरां रै मातम रै साथै ई औ उच्छब अर सम्मेलन खतम हो जावै। दरअसल, औ मिंदर अरावन रो है। ईं मिंदर नै कुतांदवर मिंदर भी कैयो जावै। तमिलनाडु रै ई केई जग्यां मांय हर साल 'मयना कोल्लई' तिंवार मनायो जावै। औ तिंवार दस दिनां तांई चालै। ईं तिंवार मांय किन्नरां नै देवी रै रूप मांय पूज्यो जावै। तमिल मांय आं देवियां नै आंग्ला या अंकला अम्मा कैयो जावै। लोग आं देवियां नै काळी मां रो अवतार मानै। कर्नाटक मांय लोग किन्नरां नै देवी शक्ति रो अवतार मानै। लोग आंरी पूजा करण खातर आंनै आपरै घरां बुलावै अर आं सूं आसिरवाद लेवै। औ दस दिनां रो उच्छब शिवरात्रि नै खतम होवै।

(5) किन्नर री मिरतु

किन्नर री मिरतु पर आपणै समाज मांय घणी झूठी बातां चालै। आपणै समाज मांय मान्यो जावै कै जद कोई हींजड़ो मर जावै तो दूसरा हींजड़ा मरघोड़ै हींजड़ै नै जूता-चप्पलां सूं पीटै अर आंगणै मांय घसीटै आद। पण आ बात सरासर झूठी है। आंरी मिरतु भी अेक सामान्य मिनख री तरियां होवै। किन्नर री मिरतु पर सारा हींजड़ा भेळा होवै। किन्नर रै घरआळां नै बुलायो जावै। जे किन्नर रा घरआळा चावै तो किन्नर नै आपरै घरां भी ले जाय सकै अर आपरै घरां बीं रो अंतिम संस्कार कर सकै। जे घरआळा किन्नर नै घरै लेजावण री हांमी भर देवै तो किन्नर रो डाक्टरी मुआयनो कर बीं नै घरआळां नै सूंप देवै।

किन्नर-गुरु मरण रै पछै बीं रा चेला गुरु रै लारै आपरी चूड़ी फोड़ै। आ चूड़ी दूजा किन्नर जका आंरा रिश्तेदार शरीक होवै, बै आय'र फुड़ावै। क्यूंकै किन्नर-गुरु पति मान्यो जावै। गुरु रै मरण रै बाद चेला विधवा हो जावै अर चूड़ी फोड़ै, नाक रो कोको निकाळ देवै, बाळ खुला करै, बिछिया, पाजेब निकाळ देवै। घर मांय चाळीस दिन तांई खरड़ो बिछै। दूसरा हींजड़ा भी घरै बैठण आवै अर समाज रा दूजा मिनख भी सोक मनावण, थ्यावस बंधावण नै आवै। किन्नर हिन्दू होवै चायै मुसळमान, दोनूं नै माटी देयी जावै। जे कोई किन्नर आपरी इच्छा समसाण मांय जलाण री प्रकट करै तो बीं नै जळायो जावै (दाग दियो जावै)। प्रो. एस. पी. व्यास 'रिर्पोट मरदुमशुमारी राज मारवाड़ 1891ई.' पृ. 384 रो हवालो देंवता थकां लिख्यो है—''हिजड़ों में शादी नहीं होती थी। जब कोई मुस्लिम हिजड़ा मर जाता तो मुसलमानों को बुलाया जाता और वे उसे ले जाकर गाड़ देते थे। हिजड़े की मृत्यु के पश्चात् उसकी सम्पत्ति का उत्तराधिकारी उसका चेला होता है। यदि चेला न हो तो उसके गुरुभाई लेते हैं। इगलास कराना इनमें बदचलनी समझी जाती थी और उसको लतिया बोलते थे। हिजड़े स्वयं दफन हेतु उपस्थित नहीं होते थे। महिलाओं की भांति घर पर बैठ कर रोते थे और चालीसवें दिन खाना पकाकर हिजड़ों को खिला देते थे। इनका खाना और कोई नहीं खाता था।'' [9]

चाळीसवैं दिन खरच करयो जावै। ईं दिन सारा हींजड़ां नै भोजन करवायो जावै। ईं दिन ई आं रै ब्याव री रस्म, भात, छूछक आद होवै। हींजड़ा रात नै स्यापो करै। जका हींजड़ा सोक मनावण घरै आवै बै स्यापो करतां कैवै—'हाय-हाय जुलमण मौत बुरी।' चाळीसवीं रात नै मौलवी बुलाईजै। बो रात री बारहा बजे कलमो पढै। बीं टेम हींजड़ा स्यापो करै, केई बरियां तो मौलवी जी भी डर'र भाज जावै। मौलवी जी नै ग्यारहा भांडा, रिपिया, गाभा-लत्ता, सोनो-चांदी अर दूजो सामान दियो जावै। आंगणै मांय अेक खाट सजाई जावै, आ खाट भी मौलवी जी नै देई जावै। जद मौलवीजी औ सामान लेय'र घर सूं निकळै तद हींजड़ा घणा रोवै अर बीं रै लारै भाजै। ईं रै आलावा जका हींजड़ा घरै बैठण खातर आवै बै जकी चीज मांगै बांनै बा ईज देई जावै। आवण आळा हींजड़ा भी गाभा-लत्ता, सोनो-चांदी ल्यावै। केई बरियां तो हिन्दू हींजड़ो मरै तो बामण बुलाईजै। हिन्दू समाज मांय मर्‌यां पछै जियां तारगां अर बामणां नै सामान दियो जावै बियां ई अै मौलवी जी नै देवै। चाळीसवैं दिन आं रा शरीक हींजड़ा आय'र चेलां रो सोक भंगावै। नूंवी चूड़ियां पैहरावै, सिंगार करवावै, कोको पैहरावै, बिछिया अर पायल पैहरावै अर ताजो भोजन करवावै। जित्ता चेला होवै बै सारा सोक मनावै। चाळीसवैं दिन ढोलक रै थापी लगाय'र आंरो काम पाछो सरू करवायो जावै। चाळीस दिनां तांई अै सोक मनावै तो धोळा गाभा पैहरै। पंजाबी हींजड़ा धोळा गाभा पैहरै अर मारवाड़ी हींजड़ा काळा गाभा पैहरै।[10]

जद हींजड़ो मर जावै तो बीं नै नुहाय-धुआय, सुंणा गाभा पैहराईजै, बीं रो सिणगार करयो जावै। गाम-मोहल्ला रा बीं नै लेय'र जावै, कदै-कदैई हींजड़ा भी समसाण घाट मांय जावै अर आपरै हाथां सूं बीं नै माटी देवै। चाळीसवैं दिन बीं रो माल-मत्तो चेला मांय बंट जावै। जे कोई चेलो नीं होवै तो किन्नर समाज सहमती सूं हाथो-हाथ नूंवो चेलो बणाय बीं नै गद्दी सूंप देवै। पण गुरुभाई नै आ सम्पत्ति कोनी मिलै। वारिस रा कागज बणाया जावै।

(6) किन्नर रो रहण-सहण

हींजड़ा पैलां सामान्य समाज सूं दूर रैवता। मान्यो ओ भी जावै कै अै मांस खावता, सूगला रैवता अर गाळी बिना बात कोनी करता हा। लोग आं सूं डरता हा। अै भी समाज सूं कट'र अपणै आपनै मिनख नीं मानता। ईं वास्तै आंरो डेरो गाम/स्हैर सूं बारै होवतो। रोटी मांग'र खावण लागग्या। आंरो रहण-सहण भी समाज सूं न्यारो होवतो। पंजाबी हींजड़ा लुगायां रा गाभा राखता अर मारवाड़ी मरदां रा गाभा पैहरता। मारवाड़ी हींजड़ा तो धोती-कुरतो अर पजामो पैहरता। पैलां आं डेरां मांय भी भींट (छुआछूत) होवती। जे कोई हींजड़ो नीची जात रो होवतो तो बीं रा भांडा भी न्यारा होंवता, पण अबै समै बदळग्यो है। सारा सिरळ-भिरळ होयग्या है। पैलां हींजड़ा दारू कोनी पीवता, पण अबै तो अै भी पीवण लागग्या। मांस तो अै सदा सूं ई खावता रैया है। आज आधुनिक समै मांय आंरो रहण-सहण बदळग्यो है। अै भी अब सामान्य मिनख री तरियां साफ-सुथरा रैवण लागग्या है। आंरो खान-पान भी बदळ्यो है।

(7) किन्नर रो ब्याव

किन्नर आपरै गुरु नै ईज आपरो पति मानै। बीं रै सारू करवा चौथ रो व्रत राखै। गुरु री लांबी उमर री कामना करै। आंरो मूळ ब्याव तो गुरु रै साथै ईज मान्यो जावै। पण असल मांय किन्नरां रो ब्याव होवै कोनी। बै सारा सिणगार आपरै गुरु नै ईज पति मानता थकां करै। पण अबै अै किन्नर भी गुरुभाई या दूजा छोरां सूं ब्याव करण लागग्या, बां सूं हेत राखण लागग्या है। केई बरियां अखबारां अर टी.वी. मांय भी किन्नर ब्याव री खबरां साम्हीं आवै। अै किन्नर जकै नै अेकर आपरो पति मान लेवै फेर बीं रै सागै सारी जिंदगी काटण रो भी प्रण लेय लेवै। हालांकि अै किन्नर प्राकृतिक सैक्स कोनी कर सकै। आं रै ब्याव री भी सारी रस्मां अेक सामान्य ब्याव री तरियां होवै। भात, छूछक सै होवै। गीत, बंदोरा भी होवै। औ ब्याव अेक आतम संतोस रो ईज ब्याव है। आजकाल तो घणा ई किन्नर टाबरां नै गोद लेवण लागग्या। दरअसल, बां रै मन मांय आदिकाल सूं ई टाबर जामण री इच्छा रैयी है, पण आ इच्छा जद सारीरिक रूप सूं पूरी नीं हुई तो आं टाबरां नै गोद लेवण री परंपरा भी सरू कर दी।

(8) किन्नरां रा लोकवाद्य

भारतीय समाज मांय वाद्यां रो संबंध देवी-देवतावां सूं मान्यो जावै। भगवान सिव रै नाच रै समै देवी लिछमी रो गावण, सरस्वती री वीणा वादन, इन्द्र सूं वेणु, ब्रह्मा सूं करताल वादन रो उल्लेख पुराणां मांय मिलै। तत् वाद्यां रो संबंध देवतावां सूं, सुशिर वाद्यां रो संबंध गंधर्वां सूं, अवनद्ध वाद्यां रो संबंध राक्षसां सूं अर घन वाद्यां रो संबंध किन्नरां सूं मान्यो जावै। घन वाद्यां मांय आवण आळा वाद्यजंतर है—झुनझुनो, घुंघरू, घंटा, जय घंटा, जळ तरंग, टल्ली, खड़ताळ, चिमटा, मंजीरा, झांझ, थाळी, रमझोळ, श्रीमंडल, कागरछ तारपी आद।

तंत्र वाद्यतुं देवानां गंधर्वाणां च शीषिरम्।
आनंद्ध राक्षसानांतु किन्नराणां धनं बिदुः।।
निजावतारे गोबिंदः सर्वमेवानयत क्षितौ।। [11]

(मतलब औ है कै तत् वाद्य देवतावां सूं, सुशिर वाद्य गंधर्वां सूं, अनबद्ध राक्षसां सूं अर घन किन्नरां सूं संबंधित हा। जद किरसन अवतार लियो तो बो आं च्यारां तरियां रै वाद्यां नै धरती पर ले आयो)

आज रै समै मांय जद किन्नर घरां मांय बधाई मांगण जावै तो आपरा वाद्यजंतर भी साथै ले जावै। राजस्थान मांय किन्नर ढोलक, खंजरी, दायरा (दारियो, दारिया) बजावै। हरियाणा मांय ढोलक अर पेटी बजावै। पंजाब मांय दायरा अर ढोलक बजावै। मतलब आज आंरा लोक वाद्य ढोलक, मंजीरा, दायरा (ढफ, ढफली, चंग, दारियो), खंजरी अर पेटी (हारमोनियम) है। पण आं सूं भी सिरै रो अेक वाद्य आंरी ताळी है। अै बात-बात पर ताळी मारै, नाचै तो ताळी मारै, गावै तो ताळी मारै। 'ताळी' आद मिनख रो वाद्य मान्यो

गयो है। ईं आदवाद्य नै अै आज तांई जीवित राख्यो है। किन्नरां रा लोकवाद्य बजावण आळां नै साजी या साजींदा कैयो जावै। किन्नर आपरा साज (वाद्य) बजावण खातर साजी नै किरायै पर लेय'र आवै। भारत देस रै न्यारा-न्यारा राज्यां मांय आंरा लोक साज भी न्यारा न्यारा होवै।

खुशी रै मौकै पर जद अै घरां मांय आवै तो आपरै वाद्यजंतरां पर नाचै-गावै। किन्नर राजघराणै सूं संबंध राखतां। ईं खातर अै नाच-गाण री कला मांय पारंगत हा। आंनै गुरु नाच गावण री भी शिक्षा देवै। दूजा घरां मांय अै फिल्मी गीत गावै अर फिल्मी स्टाइल मांय नाचै। पण पैलां राजघराणां मांय अै शास्त्रीय संगीत अर नाच सूं भी संबंधित हा। पण समै री मार होवण सूं शास्त्रीय संगीत-नाच तो रैयो कोनी, बस आपरो पेट भरण खातर आपरी कला नै जीवित राखण लागरया है।

(9) किन्नरां रा लोकगीत

किन्नरां रा आपरा लोकगीत भी होवै। अै टाबर जलमै जद आगलां रै घरां मांय लोरी गावै। ब्याव रै बगत जका आपणै आम समाज मांय गीत चालै बै या फिल्मी गीत गावै। रात जगावै या माता नै मनावै तो माता री आरती गावै। ईं रै अलावा जद आं रो ब्याव होवै तद अै आपणी तरियां ई गीत गावै। किन्नर मरयां पछै अै स्यापो करै। किन्नरां रा लोकगीत इण भांत है—

(1) लोरी

जद किणी रै बेटो जलमै तो किन्नर बां रै घरां जावै। टाबर नै गोद मांय खिलावै। लोरी सूं पैलां माता री आरती गावै, पछै लोरी गावै। भारत मांय आ लोरी आप-आपरी भासा मांय गाई जावै। हनुमानगढ़, श्रीगंगानगर जिलो पंजाबी संस्कृति रो भी मान्यो जावै। अठै री बोली मांय पंजाबी पुट है, ईं वास्तै आंरी लोरी मांय पंजाबी लोरी भी मिलै—

(अ) लोरी (पंजाबी भासा)

आ काका वे तेनू देवां लोरियां,
तेरे लख-लख सगन मनावां।
वड़ियां उमरां वाळां होवै, तेरे ब्याव तेरे आवां।
सगना दी लोरी तेरी दादी दवावै, ते दादा वंडै खंडां बोरियां
प्यौ दी पगड़ी नूं दाग नां लांवीं, मां दा मनणा केणा।
आ काका.....
सगना दी लोरी तेरी ताई दवावै, ते ताऊ वंडै खंडां बोरियां
ऐस गळी मेरा आणा जाणा बिच गळी दे कूड़ा
पाभो मंगै मुंदरियां जिठाणी मंगै चूड़ा।
छोटा देवर बां मरोड़े, छणकै मेरा चूड़ा।
मेरे चूड़े दा रंग गूड़ा, आ काका वे.....

जीं दिन काकै जनम ले लया, पेरां पाई जूती
मासी अे दी हरामजादी, नानी सोकण लूची
ओ जा चौबारै सूती, ओदा आटा खागी कुती
ओदे घरवाळै ने कुटी ते नाळै खुसरां नै गुत पटी।
आ काका.....
जीं दिन काकै जनम ले लया, घर घर वंडो शक्कर
दादी अेदी हंगण बैठी लेळी (भेड़) नै मारी टक्कर
आ गई तंदा (लुढकणा) तो पार
ओने पिंड दा किता कुम्हार, बेगी गधे ते थापी मार
नानी इक ते नाने च्यार
लावां (फेरा) लेंदी कुड़मां (सगा) नाळ
आ काका.....
जीं दिन काकै जनम ले लया दीवे पायो तेल
नानकीयां दे घर वंडण बधाइयां, दादकियां घर बेल
गवांडी दे घर बेल, ताई चाची दे घर बेल
अे दी नानी चढ़गी रेल, अे दा नाना चोवे तेल
आ काका.....[12]

(आ) लोरी (राजस्थानी भासा)

गीगा थारो पालणो, होलरिया थारो पालणो
घलवाऊं सांमली साळ रे,
आंवतड़ा रे जांवतड़ा रै थारो दादो हींडा देवै,
छोरै री दादी लाड लडावै रे, गीगा थारो पालणो...
सोनै री सांकळिया गीगा, ऊपर बैठ्यो मोर रे
मोर बिचारो के करै, नानी चुगल खोर रे, गीगा थारो पालणो...
आंवतड़ा रे जांवतड़ा रे थारो तायो हींडा देवै,
छोरै री तायी लाड लडावै रे, गीगा थारो पालणो...
आंवतड़ा रे जांवतड़ा रे थारो काको हींडा देवै,
छोरै री काकी लाड लडावै रे, गीगा थारो पालणो... [13]

(इ) लोरी (राजस्थानी भासा)

लोरी म्हारा होलर, लोरी रे
गाय भी आई घर गोरी, म्हारा होलर रे, लोरी रे
सगना री लोरी तेरी दादी दिरावै, दादो बांटै खांड बोरी
लोरी म्हारा.....

गाय भी आई घर गोरी, म्हारा होलर रे, लोरी रे
सगना री लोरी तेरी मां दिरावै, बाबो बांटै खांड बोरी
लोरी म्हारा.....
गाय भी आई घर गोरी, म्हारा होलर रे लोरी रे
सगना री लोरी तेरी ताई दिरावै, तायो बांटै खांड बोरी
लोरी म्हारा.....
गाय भी आई घर गोरी, म्हारा होलर रे, लोरी रे
सगना री लोरी तेरी काकी, दिरावै, काको बांटै खांड बोरी
लोरी म्हारा.....
टर्र-टर्र-टर्र लोरी म्हारा..... [14]

(2) देवी रो गीत (माता रो गीत)

तेरी लाडली जगावे जोत मैया तेरी लाडली
जो तेनू ध्यावे मइया सो फल पावे
तेरे द्वारे मइया खाली न जावे, सिंवर-सिंवर फल पावे।
तेरी लाडली.....
ऊंची पहाड़ी मइया मंदिर तेरा
जगती है ज्योतां दूरों दिसदा है डेरा
चारों तरफ में धाम, मइया तेरी लाडली।
तेरी लाडली...
अंधे नूं आंख मइया, कोढी नू काया
बांझो दी गोद भराय, मइया तेरी लाडली
तेरी लाडली...
नंगी-नंगी पेरां मइया अकबर आयो
बण सोनै गो छतर चढायो, मइया तेरी लाडली
तेरी लाडली...
कच्ची-कच्ची खुई, ठंडा जळ पाणी
बठै संता नै होम रचायो, मइया तेरी लाडली
तेरी लाडली...
कौन चढ़ावे मइया धजा नारियल
कौन चढ़ावे गळ हार, मइया तेरी लाडली
राजा चढ़ावे मइया धजा नारियल
राणी चढ़ावे गळ हार
कांई रे कारण मइया धजा नारियल,

कांई रे कारण गळहार
दूधो रे कारण मइया धजा नारियल,
पूतों रे कारण गळहार
तेरी लाडली...
कहां बसै मइया काळी भवानी कहां बसै महावीर
दूर कलकते मइया काळी भवानी अलीगंज महावीर
तेरी लाडली...
आओ माई जी भला, जागो माई जी भला
आज हमारे बिगड़े कारज सुधारो मइया जी भला
सुहागण के घर ढोलक बाजी जागो मइया जी भला
बहू जीवै, बन्ना जीवै, जीवै सांई जी भला
हाळी जीवै, पाळी जीवै, जीवै सांई जी भला
जच्चा जीवै, बच्चा जीवै, जीवै सांई जी भला
मइया अस्सी कोस चलावै, मइया झोळी गळै मांय आण समावै
मइया घर–घर मांय आण समावै, मइया तेरी लाडली
तेरी लाडली...[15]

(3) स्यापो (मातम)

(1)

हाय हाय चंदरी मौत बुरी, हाय हाय चंदरी मौत बुरी
(ईं लाइन नै हाय हाय, जुलमण मौत बुरी भी कैयो जावै)
की खट्टिया की खादा वे चंदरी मौत बुरी
गुरुआं दा जस खट्टिया नीं चंदरी मौत बुरी
कमळे तेरे चेले वे चंदरी मौत बुरी, हाय हाय, चंदरी मौत बुरी
सूळां दा बिछोणा वे चंदरी मौत बुरी, हाय हाय, चंदरी मौत बुरी

(2)

की होया की होया लिखियां ना मुड़ियां
हाय हाय लिखियां ना मुड़ियां
केहड़ी राहे पै गी नी लिखियां ना मुड़ियां
हाय हाय लिखियां ना मुड़ियां
चेलेआं भेस वटा लए लिखियां ना मुड़ियां
हाय हाय लिखियां ना मुड़ियां
हाय हाय लिखियां ना मुड़ियां

(3)

हाय हाय मां दी ए आन्दरे नीं वेख वे
की होया की होया मां दी ए आन्दरे नीं वेख वे
तेरा ज्याणां ना वणदा नी मां दी ए आन्दरे नीं वेख वे
तेरीयां बहुतीयां लोडां नी मां दी ए आन्दरे नीं वेख वे
भाइयां दी बांह टुटगी नीं मां दीए आन्दरे नीं वेख वे
हाय हाय मां दी ए आन्दरे नीं वेख वे [16]

(10) किन्नरां री लोकभासा

हरेक देस, समाज वरग, संप्रदाय अर धरम री भासा न्यारी होवै। 'किन्नर' सामान्य समाज मांय रैवता थकां भी केई इस्या सबदां रो प्रयोग करै, जका दूसरा लोगां रै समझ मांय नीं आवै। किन्नर समाज सूं संबंधित किन्नर ईज आं सबदां रो प्रयोग करै। आं सबदां रो अरथ भी बै ईज जाणै। किन्नर समाज मांय केई इस्या सबद है जका सूं आपां परिचित कोनी, आंरा सांकेतिक भासा रा सबद इण भांत है—

गिरिया (किन्नर रो प्रेमी, रखैल), बिलपन (लड़ाई), झलके (पीसा), डिग्गी (ढोलकी), लम्बड़ (लिंग), शास्त्रे (गाभा), भौंकनी (गंडक), धौंकनी (सिगरेट), चालकी वाळा (रिक्सा आळो), अेक बड़मा (सौ रिपिया), आधा बड़मा (पचास रिपिया), झमकना (नाचणो), उगलदान, गालदान (पीक थूकण आळो), छिबरी (बिना लिंग रो हींजड़ो), ढुलने (छोरो), खूमड़ (मूंडो), टेपका (छोरो), खांजरा (धंधो), टेपकी (छोरी), छरिन्दा (चावळ), कच्ची (सिकायत), कड़ेताल (आदमी रा गाभा), छिन्दू (हिन्दू), छिलकू (मुस्लिम), भामड़ा (भांडा), भभका (मेकअप), लुखंडे (बदमास), ठीबयो (सम्भोग), पीलमा (सोनो), सफेदी (चांदी), खांजराबाज मूरत (धन्धाआळी), फरा (धूळ), खालपी (चप्पल), लुड़खुड़ (जूं), पैरी (पाजेब), रिजक (दाणो), कोती (हींजड़ो, रखैल), फक्कड़ (बहस), भकवई (चोरी), सात्र (लुगाई रा गाभा) जोग जन्म (हींजड़ो बणती बगत जकी साड़ी गुरु किन्नर नै देवै), चोसा (ठीक), निहारन (लुगाई), पानकी (दस रिपिया रो नोट), काटका (पचास रिपिया रो नोट), कनवासी (टेलीफोन), खैरगल्लो (बेईमानी, किन्नरां रै खेतर मांय बेईमानी करणी), रिड़ी (गेहूँ), सड़कणा (गेहूँ), सिपरी (देगची), गुथी (बटुओ), पानकी (रोटी) आद।

(11) मुहावरा अर लोकोक्तियां

हींजड़ां सूं संबंधित केई मुहावरा अर लोकोक्तियां आपणै समाज मांय कही जावै, जकी इण भांत है—

1. हींजड़ा किसै दिन कतार लूंटी ही ?
2. मर-पड़ खसम करयो अर बो ई हींजड़ो नीसरयायो।
3. नाजर जी बेल बधज्यो, कै बस म्हारै तांई।
4. जैसे नपुंसक नाह मिले तो कहै लगि नारि सिंगार बनावे ?
5. सारे जग जीति लियो, हींजड़े के जाये ने।
6. बारै नाचै बादरियो, मांय नाचै नाजरियो।
7. हींजड़ै री कमाई मूंछ मुंडाई में गई। [17]

निष्कर्ष रूप मांय आपां आ बात कैय सकां हां कै भारतीय सांस्कृतिक क्षेत्र मांय आपरो घणो योगदान देंवता थकां भी किन्नरां नै मिनख नीं मान्या जावै। बै आज भी आपणै समाज अर साहित्य मांय हासियै पर है। आंरो लोकजीवण अर संस्कृति खुशी अर गम दोनां नै सांगोपांग बखाणै। आंरी संस्कृति 'ताळी' री संस्कृति है, जकी भारतीय समाज अर संस्कृति मांय आपरो ठाडो जोगदान देवै। पण आपां आंनै अस्तित्व अर अस्मिता नै स्वीकार नीं करण लागरया हां। अै आपरै संघर्ष रै ताण ई आपरी संस्कृति नै बचा राखी है।

संदर्भ-सूची :

1. पूनम महंत (किन्नर) सूं किन्नर डेरा, पीलीबंगा में शोध आलेख लेखक री बतळावण (21.3.2020)
2. सागी।
3. मधु महंत (किन्नर) सूं किन्नर डेरा, पीलीबंगा में शोध आलेख लेखक री बतळावण (20.3.2020)
4. सागी।
5. पूनम महंत (किन्नर) सूं किन्नर डेरा, पीलीबंगा में शोध आलेख लेखक री बतळावण (21.3.2020)
6. सागी।
7. सागी।
8. मधु महंत (किन्नर) सूं किन्नर डेरा, पीलीबंगा में शोध आलेख लेखक री बतळावण (20.3.2020)
9. भारतीय इतिहास में थर्ड जेंडर नाजिर (हिजड़ा) वर्ग, प्रो. एस.पी. व्यास, एसोसिएट बुक कंपनी, जोधपुर 2018
10. मधु महंत (किन्नर) सूं किन्नर डेरा, पीलीबंगा में शोध आलेख लेखक री बतळावण (20.3.2020)
11. निबंध संगीत, लक्ष्मीनारायण गर्ग, संगीत कार्यालय, हाथरस, 2012, पृ. 154
12. पूनम महंत (किन्नर) सूं किन्नर डेरा, पीलीबंगा में शोध आलेख लेखक री बतळावण (21.3.2020)
13. सागी।
14. मधु महंत (किन्नर) सूं किन्नर डेरा, पीलीबंगा में शोध आलेख लेखक री बतळावण (20.3.2020)
15. पूनम महंत (किन्नर) सूं किन्नर डेरा, पीलीबंगा में शोध आलेख लेखक री बतळावण (21.3.2020)
16. मधु महंत (किन्नर) सूं किन्नर डेरा, पीलीबंगा में शोध आलेख लेखक री बतळावण (20.3.2020)
17. भारतीय इतिहास में थर्ड जेंडर नाजिर (हिजड़ा) वर्ग, प्रो. एस.पी. व्यास, एसोसिएट बुक कंपनी, जोधपुर 2018

◆◆

राजेन्द्र शर्मा 'मुसाफ़िर'

पंदरा बरस पैली

कोरोना सूं बचाव रै टीकाकरण अभियान पछै वायरस कीं तांबै आयग्यो हो। सरकार, मानखै नै घणकरी छूट ई देय दीन्ही ही। दुकानां, फैक्ट्रियां अर दफ्तर खुलग्या हा। रेलगाड़ियां पटड़्यां माथै भाजै लागी ही। पण जात्रा टिगट-खिड़की सूं टिगट लेयनै गाडी में बैठण वाळी थिति तो अजेस कोनी आई। रेल में ई दो गज दूरी रो नेम लागू हो। सीटूं-सीट सवारियां नीं बैठ सकै ही। ऑनलाइन रिजरवेसन सूं टिगट मिलै ही। छापां में खबरां आई कै रेलवे आपरो घाटो सवारियां सूं ई वसूलैगी। सगळा आ ईज कैवै हा कै च्यार गुणा रिपिया लेल्यो पण घर सूं बारै निसरण तो द्यो। छेकड़ घर सूं बारै निसरण रो म्हारो ई नम्बर आयो। म्हैं लैपटोप माथै घरां काम करतां-करतां आंती आयग्यो हो। कंपनी वाळा गिण्या-चुण्या कारिन्दा नै बुला लिया हा। दिल्ली, नोएडा अर गुड़गांव जैड़ा मोटा स्हैरां री दुरगत तो किणी सूं छानी कोनी ही। म्हनैं ई गुड़गांव में महामारी रो भै मांय सूं सेकै हो। अजै ई कोरोना वायरस रै भांत-भांत डोळ में आवण रा समाचार डरावै हा। जोखम टळ्यो कोनी हो। सगळां रै मूंडै सूं आ ईज सुणता कै टाबरी पाळणी है तो जोखम लेवणो ई पड़सी। म्हैं ई थावर नै गुड़गांव खातर स्लीपर री रिजरवेसन करवाली ही।

बहीर हुंवती वेळा मां-पिताजी अर जोड़ायत हजार हिदायतां देंवता रैया। गाडी म्हारै अठै जंक्शन सूं ई चालै। पछै ई म्हैं बगत सूं पैली टेसण पूगग्यो। उणियारै माथै मास्क अर सिर माथै अंगोछियो

सावित्री सदन, सी-122, अग्रसेन नगर, चूरू-राजस्थान मो. 9414350848 / 7976822790

 ISSN : 2320-0995

पळेट्यां म्हारै कोच में बड़ग्यो अर बिचली बर्थ माथै अटैची धर दीन्ही। मास्क अर सेनीटाइजर रा हथियार बिना तो बारै नीसरणो बीं बगत जुरम ई हो। दसेक मिनट में गाडी चाल पड़ी। मजै री बात आ कै साम्हीं निचली बर्थ माथै अेक जनाना सवारी अर पांचेक बरस रो टाबर ई हो। म्हनैं टाळ ऊपर री दो-तीन बर्थ अजेस खाली पड़ी ही। दो गज रो सागेड़ो आंतरो कायम हो। नीचली बै दोनूं सवारी ई आपरा उणियारा सागेड़ा ढक राख्या हा। गाडी चालण रै रोळै साथै आगलै पासै री सवारियां रै मूंडै सूं फगत कोरोना अर सरकार री रीत-नीत री बातां सुणीजै ही। इयां लखावै हो कै कोरोना नै डाटण अर गरीबी सूं बचण रा बां कनै सगळा उपाय हा। पण बांनै कोई बूझ्यो ई कोनी। सरकार नै आम मिनख सूं राय अवसकर करणी चाईजै। अैड़ै में म्हारै साम्हीं बैठी सवारी जाबक ई मून धारण कर राख्यो। लुगायां बेगी-सी अणजाण सूं बात कद करया करै?

म्हैं बोरियत सूं बचण खातर म्हारी बर्थ माथै आडो हुयग्यो, खटको दाबनै अेक बत्ती बंद कर दीन्ही अर मोबाइल चलावै लाग्यो। नीचै बीं अचपळै टाबर नै जक कोनी पड़ै ही। अबकै बो टाबर आपरी मां सूं कीं आंतरै दूजै कनली सवारियां कानी जावै हो। चाणचकै ई बीं री मां बोली, ''बोलबालो पड़ै कोनी के मयंक? भोत देर हुयगी थनैं, इन्नै आ!'' म्हनैं पैलपोत बीं लुगाई री आवाज सुणीजी। ठाह लाग्यो कै टाबर रो नांव मयंक है। सवारी सूं म्हारी जाण-पिछाण नीं हुवण रै कारण बोल-बतळावण कोनी होय सकी। म्हैं टाबर कानी देखै लाग्यो। लुगाई अेकर ऊपर निजरां उठायनै देख्यो अर झट नीचै देखनै ओजूं फटकार लगाई, ''बोलबालो सोयज्या मयंक! रात रा ग्यारह बजण वाळा है। पापा नै सिकायत करूं के?''

अबकाळै म्हनैं आवाज जाणी-पिछाणी लागी। इत्ता बरसां में नीं तो कोई समाचार, नीं कदे मिलणो हुयो। पण कान ई इत्तो धोखो तो कोनी खावै। आ सागी आवाज तो अनिता री है। दूजो मन कैवै हो कै अनिता रै बोल्यां बिना ई केई बरसां ताणी बीं री आवाज म्हारै कानां में गरणावै ही। औ म्हारो बैम ई हुय सकै। म्हारै तालाबेळी लागगी। लारलै पंदरा बरस पैली रो बगत साम्हीं आयग्यो। पण अजै ताणी ओळखाण पकायत कोनी हुयी तो ओपरी लुगाई सूं बात ई कियां करीजै! नीं तो म्हैं मास्क खोल्यो, नीं बा खोल्यो हो। मांदै चानणै में डील-डोल सूं ई परख कियां हुय सकै? मनोमन ई सोचै हो कै म्हनैं बत्ती बंद नीं करणी चाईजै ही। म्हैं उडीकै हो कै बा ओरूं बोल जावै अर अबकै म्हैं बूझ लेस्यूं—आप अनिता जी हो नीं!

''इन्नै आ, स्याणो बेटो है नीं।'' नखरा करतै टाबर नै समझावती बा फेरूं बोली। अबकै म्हारै सूं कोनी रैयीज्यो। म्हैं नीचै उतर्‌यो अर टाबर सूं बतळावण रो ओळावो लेयनै बोल्यो, ''बेटा, ठेठ दिल्ली जावैगो कै दूजी किणी जग्यां? यार रात खासी हुयगी,

सोयज्या नीं। क्यूं तंग करै मां नै!'' पैलपोत म्हारी बोली सुणनै बा ई कीं थिर हुयनै म्हारै कानी देख्यो। म्हैं टाबर कनै ऊभो हो, पण देखै हो बीं लुगाई कानी। म्हारै दोनुवां री आंख्यां मिली। कीं ठाह लाग्यो कै म्हैं गळत कोनी हो। काळजै मांय अेक जबर कटार-सी चालगी। बीं कटार में अेक पीड़ रै साथै मिलण-जुलण री झुरझुरी-सी उठी। कित्ता बरसां पछै अनिता सूं आम्हीं-साम्हीं हुवण रो मौको मिल्यो है। मन री घाणमथाण रै बिच्चै चाणचकै चेतो हुयो अर मांयलो फेरूं बोल्यो कै बैरी अजै पकायत कोनी हुयी कै आ बा ई अनिता है। म्हैं सोच्यो, बोल-बतळावण करणो जुरम तो कोनी। बूझण में के आंट है? छेकड़ म्हारै सूं कोनी रैयीज्यो।

''आपजी री बोली जाणी-पिछाणी लखावै। बुरो मत मानियो, म्हारै साथै कंपनी में काम करया करता बै अनिता जी...।'' म्हारै बूझण सूं लखावै हो जाणै म्हारी जीभ रै बांयटा आवै हा।

बा मास्क नै ठोडी सूं नीचै सरकायो अर मधरी मुळक रै साथै बोली, ''कमाल है महेश जी! थोड़ीसीक बोली सूं खूब ओळख्या थे तो। बियां मयंक सूं थांरी बतळावण सुणतां पाण म्हैं ई अेकर चमगूंगी हुयगी। दुनिया गोळ है, भंवता-फिरता कुण कठै मिलज्या, कुण कैय सकै? देखल्यो, कित्ता बरस हुयग्या? आपां मिल्या ई तो कठै? रेलगाडी रै डब्बै में।''

मां नै ओपरी सवारी सूं बंतळ करतां देख मयंक मां रै कनै आयग्यो। अनिता बीं नै आपरी बर्थ माथै ई सुवाण लीन्हो। म्हैं बिना बूझ्यां ई बीच वाळी बर्थ नै सामटनै सांकळ चढा दीन्ही अर अनिता री सामली बर्थ माथै बैठग्यो। अबै म्हे आम्हीं-साम्हीं हा। खटको दाबनै अेक बत्ती पूठी जगा दीन्ही। बा टाबर नै जपावण री खेचळ करै ही। इण दो घड़ी रै मून में ई म्हैं नीं चांवता थकां चितार में चुबकी लगावै लाग्यो। बै सगळी बातां याद करनै मांय अेक खारोपण पसरण ई वाळो हो, पण अनिता रै उणियारै कानी गौर सूं देख्यो तो बो खरास पूठो मांय जायनै जमग्यो। अनिता रै उणियारै माथै पड़ी सळां अर जबाड़ै रा हाड, बत्ती रै चानणै में ई साव दीसै हा। म्हैं देखै हो, गोळ-मटोळ गोरो चैरो, जाडा केश अर गुलाबी होठां वाळी अनिता तो आ कोनी। जकी आपरी भायल्यां नै कैवती कै म्हारो घरधणी बो ईज हुवैगो जकै रो पैकेज कम सूं कम पंदरा-बीस लाख हुवै। बीच-बिचाळै ई कैवती, यार ऐश करणी है तो ब्याव रो झंझट ई क्यूं? कमाओ-खाओ मौज करो। नूंवी फैसन रा गाभा-लत्ता अर सिणगार। जकी आपरै सोवणैपण माथै इतराती, लटका-झटका दिखावती बा आज इत्ती होपलैस? म्हैं सोचै हो अनिता ब्याव किण रै साथै करयो? म्हारै सूं बेसी सौवणो अर पईसा वाळो मुरगो मिलग्यो स्यात। पण बा रूपाळी अनिता हाड-मांस रो ढांचो कियां हुयगी?

''आजकलै कठै हो? मतलब नौकरी कुणसी जग्यां है? आज जात्रा कठै ताणी री?'' अनिता खुद ई मून तोड़ती बोली।

''म्हैं तो पांच बरस सूं गुड़गांव री अेक एमएनसी में हूं। आछी हाइक मिलगी तो पुराणी कंपनी छोड दीन्ही। अठै आयां पछै अेक प्रमोशन ई मिलग्यो अर अबै अठै ई सैटल हुयग्यो। जोड़ायत हाउसवाइफ है, म्हारा दो टाबर है। गुड़गांव रै सैक्टर 17 में सुखराली मार्केट कनै फ्लैट है...। आपां जद साथै काम करता बीं बगत तो सीखतोड़ ई हा। हवा में उडण वाळा जवान। आपणां सगळां रा सुपना ई भोत बडा हा। पण पछै ई आज खुद नै देखूं तो म्हनैं म्हारी जिनगाणी माथै संतोस है। थे ई नौकरी तो कर रैया हो नीं? अबै तो आपरै परवार री बेल ई बधगी। बियां थे तो कैया करता कै म्हैं ब्याव ई कोनी करूं।'' म्हैं म्हारै उथळै साथै ई अनिता नै उण अतीत में घसीटणो चावै हो जद म्हे दोनूं कुंवारा हा अर अेक ई कंपनी में काम करता।

''मिनख नै सुपना तो लेवणा ई चाईजै महेश जी। मैसूस हुवै कै थांरा-म्हारा सुपना में म्हैं ई फासलो बधा दीन्हो। म्हनैं चेतै आयगी, थे के केवणी चावो। खैर... अै सगळा तकदीरां रा खेल है। म्हारो सासरो गुड़गांव ई है, सैक्टर नम्बर गुणतीस में। 17 अर 29 में आंक री जित्ती दूरी लखावै, बित्ती आवण-जावण में कोनी। हालबगत म्हारै कनै नौकरी कोनी। कोविड रै कारण छूटगी। बियां ई मयंक जद पेट में हो, नौकरी डावांडोल हुयगी अर छोडणी पड़ी। औ दो बरस रो हुयो बीं टैम पूठी अेक कंपनी जोईन कीन्ही। रैयी बात ब्याव री... म्हारी बत्तीस री औस्था ताणी ब्याव खातर म्हारी ना-नुकर चालती रैयी। छेकड़ चोखो घर देखनै पिताजी हामळ भरवा ई दीन्ही। ब्याव रै दो-तीन बरस पछै ई परिवार सूं न्यारा-निरवाळा हुया तो आं रै पांती आई अेक इलैक्ट्रोनिक्स आइटम री दुकान। अबार लोकडाउन रै कारण बो धंधो ई चौपट हुयग्यो। देख्यो जावै तो पैलड़ी अनिता तो कदास मरगी। महेश जी, बीं बगत नै बिसरायां ई आज री गत समझ सकोगा।'' अनिता फीकी मुळक रै साथै आपरो सगळो विरतांत कैवणौ चावै ही। पण नीं तो म्हनैं बीं रै धणी रै बिजनस अर नीं बीं रै सासरै सूं मतलब हो। म्हैं बात काटतो थको बोल्यो, ''कमाल है! अेक ई स्हैर में आपां दोनूं रैवां अर मिलणो कदे ई कोनी हुयो? थे नौकरी करणी चावो तो म्हारै एचआर अर बीजां सूं बात करनै देखूं के? परवारू अबखायां रै कारण प्रोफाइल तो आपरी चोखी कोनी रैयी पण...।''

''देखस्यां...! अेकर थमो।'' कैयनै अनिता आपरो थाकैलो दरसावती गैरी सांस खैंची। म्हनैं लखायो, नौकरी खातर कैवणौ अनिता नै कीं कमती दाय आयो। ''देखस्यां... अेकर थमो'' जैड़ा सागी सबद ई तो सुणतो रैयो म्हैं। पंदरा साल पैलड़ी कंपनी में म्हैं अनिता सूं मामूली सीनियर हो। म्हैं चावै हो कै आज बा फेरूं म्हारी कंपनी में म्हारै सूं

जाबक नीचै ओहदै माथै काम करै। प्रेम? हां घणो ई प्रेम हो। म्हैं आतमा सूं चावण लागग्यो हो। ब्याव करणो चावै हो। ब्याव पछै म्हारै कानी सूं नौकरी करण री छूट। म्हारी दोनुवां री अेक ई लय-ढब री प्रोफाइल। रैवण वाळा ई अेक जिलै रा। जात-धरम ई कोनी अड़ै हा। म्हैं आपसरी में इत्ता रळ-मिलग्या कै म्हैं अेक दिन कैय दीन्हो कै अनिता आपां ताजिंदगी साथै रैवण री सोच सकां। उथळो मिल्यो, ''महेशजी, म्हैं ई आ चावूं पण... अेकर थमो, देखस्यां।'' जद कदै म्हैं प्रपोजल राखतो, औ ईज उथळो त्यार मिलतो। बांण मुजब बा म्हारै सूं खरचो ई भोत करावती। जलमदिन माथै गिफ्ट। वेलेन्टाइन-डे रै मिस भांत-भांत री गिफ्ट, बां सातूं दिनां तो म्हैं अेक-दूजै रै मोबाइल में ई मौजूद रैवता। देखस्यां-देखस्यां करतां अेक बरस निसरग्यो। पछै संगळियां सूं ठाह लाग्यो कै अनिता नै महंगी गाडियां में घुमावणियो अर हथाळ्यां माथै राखणियो दिलदार जीवणसाथी चायै नींतर कुंवारपणो। अैड़ो झटको लाग्यां पछै म्हनैं चेतो हुयो। आस्तै-आस्तै म्हारै दुराव पछै ई अनिता तो बियां री बियां ई मौजमस्ती में काम करती रैवती। पीड़ भुगततो म्हैं बठै घणा दिन काम कोनी कर सक्यो अर कंपनी बदळ लीन्ही। बो दिन अर आज रो दिन...। अनिता कानी सूं प्रेम में लुका-छिपी अर कूड़ नाटक सूं म्हारै समझ वापरी कै मां-बाप रै कैवण में अबै घर बसा लेवणो चाईजै।

''म्हैं किणी काम सूं पीहर आयोड़ी ही। समाचार मिल्यो कै मयंक रा पापा कोराना पोजिटिव आयग्या। घरां ई क्वारेंटीन है। बांरी खेचळ करणियो कोई तो घर में चाईजै नीं। कालै बांनै डाक्टर कनै ई ले जावणो है। दूसर केई जांच ई करावणी है। औ तो संजोग ई बणग्यो कै थे चांणचकै मिलग्या। म्हनैं भोत खुसी हुई। मोटा स्हैरां में अपणायत कठै अर ईं महामारी रै बगत तो बियां ई मिनख अेकलखोरड़ो हुयग्यो। ...रात घणी हुयगी, अबै अेकर बत्ती बंद करनै तीन-च्यार घंटा आराम करल्यां तो! कालै तो थांरी छुट्टी है, अेकर घरां पधारियो, म्हनैं आपरी मदद ई मिलसी। नौकरी खातर तो पछै सोचस्यां। क्यूं घरां आवोगा नीं थे?'' केई ताळ अबोली रैयां पछै अनिता अपणायत अर सैयोग मांगती मींट सूं बोली।

''हां-हां अवसकर आस्यूं! म्हैं मोबाइल नंबर बोलूं जकां माथै थे घंटी करो, अेक-दूजै रा नंबर सेव करल्यां। आप फोन कर देया, अर ठिकाणौ भेज देया। म्हैं पूग जास्यूं। म्हारै सूं जको सैयोग होसी, बो करस्यूं।'' इत्तो कैयनै म्हैं बत्ती बंद कर दीन्ही अर म्हारी बर्थ खोलनै आडो हुयग्यो। मन री जात्रा आगै-लारै चालती रैयी। नींद कद आई ठाह ई कोनी पड़ी। गुड़गांव जंक्शन माथै उतरनै म्हे आप-आपरै गेलै चाल पड़्या। भाखफाटै रो बगत हुयग्यो हो। म्हैं सोच्यो—अनिता घरां बुलावण रो फगत दिखावो करयो है। म्हैं म्हारै फ्लैट में आयग्यो। दीतवार नै काम कीं हो कोनी। रात री बातां याद करतो अनिता रो फोन उडीकै हो। लगैटगै दस बज्यां साचाणी अनिता रो फोन तो आयग्यो।

''नमस्कार महेश जी! म्हैं आपनै गूगल लोकेशन भेज दीन्ही है। म्हारै घरां खातर बहीर हुय जावो अर रोटी अठैई जीम लिया। पछै चालस्यां, मयंक रै पापा नै अस्पताळ दिखावणो है। म्हैं आपरी उडीक करूं।'' अनिता आपरी जाण, सैजता सूं पंदरा बरस पैलड़ै महेश नै फोन कर्‌यो।

म्हैं उछाव सूं हामळ भरतो उथळो दीन्हो अर बेगो-बेगो गाभा पलटनै त्यार हुयग्यो। फ्लैट रै ताळो जड़्यो अर टैक्सी कानी चाल पड़्यो। अनिता रा बोल म्हारै कानां में गरणावै हा—मयंक रै पापा नै अस्पताळ दिखावणो है। पैलड़ी अनिता तो मरगी। महेश जी, मोटा स्हैर में अपणायत कठै?...

चाणचकै ई म्हारा पग थमग्या। ठाह नीं कुण मांय सूं लगोलग बोलण लाग्यो, ''ओजूं कदे देखस्यां, महेश।'' म्हैं ततछिण पूठो म्हारै फ्लैट रै गेलै मुड़ग्यो। अवचेतण सूं उकळती सिमरत काळजै माथै कुंडली मार बैठी? म्हैं बेड माथै पड़ग्यो अर अनिता रा मोबाइल नंबर ब्लॉक कर दीन्हा।

◆◆

राजस्थानी री आं पत्र-पत्रिकावां नै ई बांचो अर सदस्य बणो

जागती जोत (मासिक)
संपादक : शिवराज छंगाणी
राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति
अकादमी, मुरलीधर व्यास नगर
बीकानेर (राज.) फोन. 0151-2210600

माणक (मासिक)
संपादक : पदम मेहता
मानजी का हत्था, पावटा
जोधपुर (राज.)
मो. 9828033900

बिणजारो (सालीणो)
संपादक : नागराज शर्मा
बिणजारो प्रकाशन, पिलानी
जिला-झुंझुनूं (राज.)
मो. 9950428197 (महेंद्र मील)

नेगचार (ई पत्रिका)
संपादक : डॉ. नीरज दइया
सी-107, वल्लभर गार्डन
बीकानेर (राज.) 334003
मो. 8619614360

चेतन स्वामी

टैणां रै ढाळै में स्कूल

लगैटगै साठेक बरस पैली चतुर्वेदीजी रो आखो कड़ूंबो म्हारै गांव आयो हो। कड़ूंबो कांई—चतुर्वेदीजी, बांरा मेमसाब, सफेदझक बंगाली साड़ी पैरयोड़ी बांरी अेक ई जैड़ी सकल-सूरतवाळी दोय बैनां, चतुर्वेदीजी रा दोय साळा अर सालेक रो चतुर्वेदीजी रो डावड़को। भादाणियां री हेली सारलै नोहरै मांय चिणायोड़ा च्यार आसरां मांय बांरी गिरस्थी रो जाचो जचाइज्यो। लोग अंदाजो लगावता कै स्यात भादाणी ई बांनै इण नगर मांय आवण नूंत्या है। सुमेरमलजी भादाणी रो झांसी कनै किणी मुकाम मांय कारोबार रैयो है। बठै ई बांरी मुलागात सुखदेवजी चतुर्वेदी सूं होई अर भणाई खातर आपरो आखो जीवण देवण री बांरी आखड़ी, भणाई प्रेमी भादाणीजी नै घणी दाय आई। भादाणीजी भलांई आपरै गांव नै, जिको कै होंवतो-सो कस्बो हो, नै नगर कैवता पण इणरी असल तासीर अेक गांव री-सी ही। बामण-बाणियां री इण बस्ती मांय भणाई-पढाई रो घणो ई तासातोड़ो हो। अेक फगत शिवप्रतापजी मारजा री पोसाळ ही, जिण मांय बांरा नैना भाई रामप्रतापजी रा चूंटियां सूं डर'र घणा भणेसरी तो भणाई रै बास्तै लगावणी चोखो समझता।

'भादाणी' इण स्हैर नै बसावणवाळो नामी ओसवाळ परिवार हो अर आपरै कस्बै रै हरेक समाजू काम मांय आगीवाण होवण रै गीरबै रै कारण सुमेरमलजी रै जची कै इण बणतै स्हैर मांय जे ढंग री स्कूल खुल जावै तो गांव रा टाबर तरक्की करै। बां आपरै कुअै

काळू बास, श्रीडूंगरगढ़ (बीकानेर) राज. 331803 मो. 9461037562

 ISSN : 2320-0995

री सारण कनै दोयेक कमरा पक्का अर दायेक टेणां रा ढाळा बणवा दिन्हा। चतुर्वेदीजी स्कूल रै आगै अेक बोरड टंगायो—'बालभारती मिडिल स्कूल'। स्हैर रै बाणिया-बकालां रै घरां मांय हरख रो सरड़ाटियो-सो बैयग्यो। भादाणी परिवार खातर आसीसां रो परनाळो-सो खुलग्यो हो। थोड़ा ई दिनां मांय तीस रै नैड़ा टाबर उण स्कूल मांय भरती होयग्या। शिवप्रतापजी मारजा नारेळ सट्टै टाबर नै भरती करता, उठै चतुर्वेदीजी री स्कूल मांय पांच रिपिया सालीणी भणाई फीस ही। अेक ई स्कूल मांय तीन मास्टर अर तीन मास्टरण्यां, घणी मोटी बात ही। इतरो बेसी स्टाफ तो सरकारी स्कूलां मांय ई कोनी होवतो। नरम-नरम हिन्दी बोलणवाळी बैनज्यां नै पढावतां लोग घणै अचम्भै सूं देखता। चतुर्वेदीजी री दोवूं बैनां री धोळी धक्क साड़ियां नै देख'र लोग अंदाजा लगावता कै स्यात अै विधवा है—नींतर धोळी साड़ी क्यूं पेरै ? कोई कैवतो नांऽऽ आं ब्याव ई कोनी कर्‌यो—कुंआरी है। पांच-छव साल तांई इयां—कुंआरी-विधवा रै अचम्भै मांय नांखतां-नांखतां छैकड़ दोवूं बैनज्यां चतुर्वेदीजी रै दोवूं साळां राजेश अर महेश सागै ब्याव कर लिन्हो। साठ बरस पैली आ घणी अजब अर कैण-कथण वाळी घटणा ही—अेक मोहल्लै मांय ब्याव कोनी होवतो—बास-गळी रा तो बैन-भाई होवै, पछै सागै काम करणिया तो होवै ई बैन-भाई रै ज्यूं। कीं दिनां री चकचकाट अर 'मरो रे', 'मरो रे' पछै स्सो-कीं स्यांत होयग्यो। नूंवी बात नौ दिन, खेंचीताणी तेरह दिन।

स्कूल री कमाई सूं चतुर्वेदीजी रै कड़ूंबै रो खरचो दोरा-सोरो चालतो, कीं सायता भादाणी परिवार कर देवतो। बालभारती रा छवूं मास्टर-मास्टरणी अेक ई घड़त रा मिनख लागता। दूजा लोगां सागै नीं बेसी मेळ-मुलागात, नीं फालतू हलर-फलर, दिनुगै नौ बजी सूं सिंझ्या पांच बजी तांई झकझल भणाई ई भणाई। बिचाळै आधै घंटै मांय टाबर ई आपरै कनै-कनै रा घरां मांय जाय दोपारो कर आवता अर अै मास्टर-मास्टरण्यां ई रोटी री डांचळी-सी मारता। टाबर बांरा भगवान हा, बै भणाई करावता बिस्यै जी-सौरै सूं तो कोई भगवान री पूजा ई कद करै। चतुर्वेदीजी सभाव रा भोत करड़ा हा, बै दकालता जणां टाबरां रै पेसाब निकळतो, थोड़ी-सी अठारह-उगणीस बात लागती तो आपरी बैनां, धणियाणी अर साळां नै ई झिड़कणै मांय बांनै कोई संको कोनी आवतो। बै कैवता—आं टाबरां रा माइत आपां रै मुंडै कांनी देखै—आपां आं सागै गेला-सेली कियां बरत सकां, ओ तो विद्या माता सागै दगो होयग्यो।

कणै ई कोई अचपळै टाबर रै लप्पड़ मार देवता तो बीं दिन चतुर्वेदीजी दोपारो कोनी करता अर खुद नै धिरकारण मांय लाग्या रैवता, ''अरे ये मैंने क्या कर दिया, अरे मैंने बाल भगवान पर हाथ उठाया।'' पाछा जाय'र टाबर नै बुचकारता, आपरी जेब सूं निम्बूरस री फांक काढ'र देवता, बांरी आंख्यां सूं लरक-लरक आंसू बांरै धोळै चोळै री बावां माथै पड़ता रैवता।

कणै ई कोई टाबर दिसा-फराग चल्यो जावतो तो बै उणरी सागण मां री ज्यूं साफ-सफाई कर देवता। कैवता, ''ओहो, तो क्या हो गया? मेरे हाथ तो सोने के हैं।''

पंदरा बरसां मांय बांरा भणायोड़ा कित्ता ई टाबर कामयाब होयग्या। कामयाब टाबर बांनै प्रणाम करण नै आवता तो बै बां में कोई खास दिलचस्पी कोनी जतावता, सोभाऊ कैवता, ''ठीक है-ठीक है, भाई करो काम, आगे बढ़ो, देश का निर्माण करो, मिट्टी से लो मिट्टी को दो, जाओ भोत अच्छा।''

चतुर्वेदीजी री भणाई, बांरो टाबरां रै प्रत समरपण देखतां, कनै रै मोटै स्हैर सूं बांरै कनै दोय-तीन बाणिया लोग आया अर बां मांय सूं अेक बांनै लोभ दिरावतां कैयो, ''चतुर्वेदीजी, थांरी ख्याति सुण'र आया हां, थांरै जियांकलै गुणी मिनख खातर आ भोत छोटी जग्यां है, अठै टेणां नीचै सौ-पचास टाबरां नै लियां बैठा हो, म्हांरै सागै मोटै स्हैर चालो, थांरी जरूत बठै है, बठै थांरो नांव-नामून घणो होसी।''

चतुर्वेदीजी आयोड़ै मिनख नै उजबक री ज्यूं जोय रैया हा। कैवणियै रै मुंडै सूं झरतै अेक-अेक बोल रो बै जाणै अरथाव समझण री चेस्टा कर रैया हा—बांनै लाग्यो कै ओ आदमी चात्रक है। चतुर्वेदीजी नै बोलबाला सुणतां देख'र उण मिनख रो हियाव बध्यो—बो कैवण री डोर पाछी बांधी, ''अठै है के, पूरा मकान नीं, टाबर ई आधा नागा-उघाड़ा, स्कूल रो-सो लोतर ई कोनी...''

''बस-बस-बस... मैं आपकी बात समझ गया, यह जैसी भी है, ठीक है, आप लोग पधारो—मुझे यह गरीब कुटिया जैसी स्कूल बहुत प्यारी है... मुझे आपकी सुविधाओं का क्या करना है... मेरा बच्चों के साथ जो रिश्ता है, वह सुविधापूर्ण है—इस सुविधा के आगे बाकी किसी का कोई मोल नहीं... मैं आप लोगों की बात समझ गया... अब आप लोग पधारो... आपको कष्ट हुआ, मैं क्षमा चाहता हूँ।'' हाथ जोड़तां चतुर्वेदीजी उभा होयग्या। दूजै स्हैर सूं आवणिया मिनख ई मुंडो लटकाय'र रवाना होयग्या। रस्तै मांय जरूर ई बांरी राय चतुर्वेदीजी खातर आ ई रैयी होवैला—''अेबी अर खोड़ीलो मिनख है... आपरो भलो ई कोनी जाणै।'' सतरहै-अठारै बरसां लग स्कूल चरड़घाणी चालती रैयी।

अेक दिन अेक इन्सपेक्टर स्कूल में आयो। स्कूल मांय टाबरां री सुथराई, बांरो अनुसासन अर मास्टर-मास्टरण्यां री लगन देख'र घणो प्रभावित होयो। इन्सपेक्टर स्कूल नै एड-लिस्ट मांय लेवण री सिफारस विभाग सूं करी। कीं महीनां पछै ई स्कूल नै साठ फीसदी एड मिलण लागगी। दोवूं साळा अर चतुर्वेदीजी री दोवां बैनां साठ परसेंट एड नै ई आपरो सौभाग मान लियो अर बै इण एड सूं घणा राजी होया। पण ओ राजी होवणो घणा दिन चाल्यो कोनी। विभाग नै जका कागद भेज्या जावता बां में सौ फीसदी यानी

समूळी तनखा दिखावणो जरूरी हो। उणरै वास्तै फीस री नकली रसीदां काटणी अर उण सूं चाळीस परसेंट री भरपाई करणी देखाळीजती। साल भर तो इयां चाल्यो, पण असूलां रा पक्का चतुर्वेदीजी इण फर्जी काम नै करण खातर सफां मना कर दियो। बै आपरै साळै नै कैयो, ''हम झूठ क्यों बोलें—तनखा का साठ परसेंट अनुदान मिलता है और साठ देते हैं—बाकी हमारे पास कुछ है ही नहीं तो झूठी रसीदें क्यों काटें—यह तो बिना काम की बेईमानी हुई न!''

दोवूं साळा, दोवूं बैनां, बांरी धणियाणी अर अेकाध कर्मचारी जका एड रै पेटै राख लिया हा। बांरी तरफ सूं अेक साळो बोल्यो, ''नकली रसीदें काटते हैं तो क्या फर्क पड़ता है, अधिकांश संस्थाएँ ऐसा ही करती है।''

''करती होंगी, पर चतुर्वेदी क्यों करे?'' इण सूं आगै रो कोई तरक बै नीं समझा सक्या।

चतुर्वेदीजी—विभाग नै कागद लिख्यो कै विभाग साठ परसेंट तनखा देवै, म्हे साठ परसेंट बांनै तनखा देय देवां, बाकी स्कूल री इन्कम टाबरां री फीस सूं है, उण सूं दूजा नैना-मोटा खरचा पार पड़ै। म्हांरै कनै सौ परसेंट तनखा रा पइसा ई कोनी होवै—म्हे कूड़ी अरनिंग क्यूं देखावां?

विभाग साच माथै कियां चाल सकै—एड बंद कर दिन्ही।

चतुर्वेदीजी री लुगाई तो हाथ अपड़'र आयोड़ी ही, इण वास्तै आपरै धणी नै छोड'र जावै कठै, पण दोवूं साळा अर दोवूं बैनां अेकै सागै स्कूल छोड'र दूजी एडेड स्कूल मांय बूहा गया। चालती-चालती स्कूल बंद होवण री स्थिति मांय आयगी। टाबरां री कीं फीस बधाई, कीं दोय-तीन कम तनखा रा मास्टर लिया, कीं भादाणी परिवार सैयोग कर्‌यो उण सूं स्कूल दोय साल और चाली। छैकड़ बीस साल चाल'र स्कूल बंद होयगी। लोगां नै गुरुजी अधगैला लागता। कैवता, ''गुरुजी, चोखी भली साठ परसेंट एड मिलै ही, साठ सूं सत्तर-अस्सी होय जावती, इस्या फालतू असूल कांई काम रा?''

''नहीं भइया, हमसे गलत काम नहीं होता।''

पांच-छह महीनां तांई चतुर्वेदीजी इण उधेड़बुन में रैया कै आपां नै कांई करणो चाइजै। जिकै स्हैर मांय नाम पनाम दोय-तीन स्कूलां मांय अबै दरिद्रता कोनी रैयी। मोटी जग्यां में तीन-तीन मजली स्कूलां अर बांरी दसूं गाड्यां सूं अळगै-अळगै रा टाबर स्कूलां पूगै। अेकसी ड्रेस, हरेक टाबर री पीठ माथै अेक सेंठो-सो बस्तो। भारी भरकम फीस। चतुर्वेदीजी इण बदळाव नै देख'र घणा रुआंसा होय जावता। बै मन-मन में बड़बड़ावता—''अरे, यह हो क्या रहा है! शिक्षा कोई व्यवसाय होती है? यह तो ठगी है। विद्या कोई बेचने और खरीदने की चीज होती है? तुम हजार व्यवसाय करो, पर इस एक को तो छोड़ दो!''

मेळै मांय पूंपाड़ी कुण सुणै! सुणै तो कोई क्यूं गिनारै!

आपरै अेका-अेक लाडेसर राजेश चतुर्वेदी नै ई बै सदा अध्यापक बणनै री सीख देवता। सरकारी अध्यापकां सूं चतुर्वेदीजी सदा ई चिड़ता, इण वास्तै अंग्रेजी साहित्य मांय पी-एच.डी. करणै रै पछै भी राजेश, सरकार कांनी मुंडो कोनी करयो। आं दिना अेक लूंठै स्कूल रो प्रिंसीपल है। अंग्रेजी साहित्य मांय पी-एच.डी. करयोड़ो अध्यापक इण भारत भौम ऊपरां इतरी अंग्रेजी ढोळ्यां पछै ई लाधै कठै है? तीस बरस री औस्थ्या मांय राजेश अेम.अेड. भी कर नाखी ही। इतरी जोगताई पछै गवरमेंट मांय जावणवाळै नै रोकै ई कुण, पण आपरै जीसा रै सभाव नै देखतां उण अेक इंग्लिश मीडियम स्कूल रो प्रिंसीपल बणनो कबूल कर लिन्हो। तनखा भी गवरमेंट सूं कीं थोड़ी जादा ई ही अर आगै बधण री गुंजाइश ई कम नीं ही।

चतुर्वेदीजी नै राजेश बतायो, ''जीसा, मदर इंडिया नांव री इंग्लिश मीडियम स्कूल उणरो प्रिंसीपल रै रूप मांय चयन करयो है। आप कैवो तो ज्वाइन करूं?''

चतुर्वेदीजी कई ताळ निरूत्तर रैया। ठीक है—भादाणीजी बैठण नै ठायो देय राख्यो है, पण रोटी-पाणी रो खरचो तो खुद नै ई करणो पड़ै। लारलै अेक-दो साल सूं राजेश ई आपरी पढाई सागै ट्युशन कर'र घर चलावै। अेक मरियल-सी आवाज में चतुर्वेदीजी कैयो, ''करलो, जैसा तुम्हें ठीक लगे।''

मदर इंडिया स्कूल आपरै प्रिंसीपल नै गाडी सूं घरै छोडै, गाडी सूं लेय'र आवै। राजेश री माताजी घणा हरखित होवै, पण बो रवाना होवती वेळा मा-जीसा रा प्रणाम करणा कदैई कोनी भूलै। उतावळ मांय उडती-सी निजर सूं जोवै, जीसा रो चेहरो भावशून्य-सो रैवै। राजेश नै ठाह है, जीसा स्सो-कीं जाणै कै अध्ययन रै नांव माथै जितरा भी टुंजर अर तामझाम होवण लाग रैया है, बांनै ढोवण रो काम तो छैकड़ अभिभावक रो है। स्कूल री भव्य इमारत अभिभावक री पीठ उपरां चीणीजै। मोटरां-गाड्यां अभिभावक रै डील उपरां चालै। स्कूलां री भव्यता रो सगळो दारोमदार अभिभावक री जेब उपरां टिक्योड़ो रैवै। इण सैंग रै उपरांत टाबर मांय जिका बीज तोप्या जावै, बां सूं जिको पौधो निकळै बो घणकरो आत्मकेंद्रित, धनापेक्षी अर लगैटगै सुवारथी सो ई होवै। धन रै लटूमण री विद्या ई तो सिखाई जावै आं ऊंची-ऊंची स्कूलां मांय। धन कमाणो सीखणै नै ई विकास अर प्रगति कैयो जावै।

राजेश सोचै—आं स्कूलां मांय जिकी फौज त्यार करी जावै, बा लौकिक जीवण मांय जुड़तां ई फगत गरीबी सूं बारै निकळण री जोर अजमाइस मांय लाग जासी। इण अेक हीलै रै लारै जीवण रो बीजो सैंग रूपाळोपण रूखो अर बेरंग होवतो जासी। जीसा, अध्यापक रा मायना बैराग्य सूं जोड़ राख्या है, त्याग सूं जोड़ राख्या है। जीसा कैवै—साचो

गुरु तो बो होवै जिको भौतिकता रै कादै सूं बारै निकळण री सीख देवै। गुरु ई पजावै जद निकाळै कुण ?

आं ऊंची-ऊंची स्कूलां मांय एडमिशन लेवती बगत टाबर रो बाप सोचै, म्हारै टाबर नै सरदी-गरमी कीं नीं लागै। स्कूल मांय भी उणरै राजसी ठाठ रैवै। इण मानसिकता नै स्कूलां भी खूब भुनावै। स्कूल री भौतिक सुविधावां रा बढ-चढ'र बखाण करीजै। सुविधावां ई एडमिशन री गिणत बधावै। कैयो जावतो रैयो है कै शिक्षा बिना तो मिनख सींग-पूंछ बायरो ढांढो ई होवै, पण इण सूं आगै सोचां तो अै स्कूलां भी तो अेक बजारू मिनख ई बणावै। लाखां रिपिया खरच कर'र पायोड़ी शिक्षा इण अेकूकै साच सूं बारै ई कोनी निकळण देवै कै म्हारी शिक्षा माथै लाखूं रिपिया म्हारै घरवाळा अकारथ थोड़ा ई लगाया। लगाया तो वसूलण खातर ई है नीं।

''कांई सोच रैया हो प्रिंसीपल साब ?'' स्कूल रो मालिक, जिणनै अठै डायरेक्टर साब कैवै, उणनै पूछ रैयो हो।

उण हंस'र टाळणो चायो। कैयो, ''बस, एडमिशन रै अगलै मिशन पेटै सोच रैयो हो।''

''चतुर्वेदी साब, मिशन रो कांई सोचणो है, इण बार आपणै अठै बंपर एडमिशन होय रैया है। स्मार्ट क्लासेज अर फुल ए.सी. रो फार्मूलो काम करग्यो। लोग सुविधा रा पइसा देवै। सुविधावां बत्ती होवै तो पांच हजार रिपिया फीस रा बेसी भी लेवो तो गार्जियन रै दुखै कोनी।''

''हां, आ तो है सा...'' इयां कैवतां राजेश रै मांयनै अेक खाटी डीक-सी ऊपड़ी। उणनै लाग रैयो हो कै अेक साव खोटै बिणज रो बो हिस्सो बण रैयो है। स्कूल रो ओ लकदक ए.सी. ऑफिस जाणै फगत अेक ई गीत गाय रैयो है—बौपार... बौपार... बौपार...।

सिंझ्या राजेश घरै पूग्यो तो कीं आमण-दूमणो सो हो। चतुर्वेदीजी उणरो चैरो देख'र ई भांपग्या कै इणरै मांय कोई घाण-मथांण चाल रैयी है...। बै बूझ्यो, ''क्या हुआ, चेहरा उतरा हुआ सा है, स्कूल जचा नहीं क्या ?''

''नईं सा, इसी कोई बात कोनी।'' राजेश टाळणो चायो।

''फिर भी...।'' राजेश नै ठाह है, जीसा जित्तै संतुष्ट नीं होवै, लारो कोनी छोडै। जीसा अेक सवाल थोड़ै से ठैराव रै पछै ओजूं बूझ्यो—''मैंने सुना है तुम्हारा स्कूल मालिक और भी कई धंधे करता है ?''

''हां, गंगानगर क्षेत्र में कीं दारू रा ठेका है।''

सुण'र बै कई दिनां पछै हो-हो-हो कर'र जोर सूं हंस्या।

''एक ही व्यक्ति दो तरह के व्यवसाय कर रहा है, शराब भी बेच रहा है और शिक्षा भी... तुम्हारे पास और भी तो कुछ बेचने को है, तुम अध्यापक लोग संस्कार बेच दो... जब सब-कुछ बाजार में परिवर्तित हो रहा है तो, तुम पीछे क्यों रहो...''

...व्हाला पाठकां, पिता-पुत्र री इण हथाई अर शास्त्रीय नोक-झोंक सूं एज्यूकेशन रै नूंवै ढाळै माथै कीं फरक कोनी पड़्यो। हां, इत्तो जरूर होयो कै चतुर्वेदीजी रै लाडेसर दूजै दिन आपरो इस्तीफो स्कूल भेज दियो।

किणी बतायो कै चतुर्वेदीजी अर बांरो लाडेसर पुराणी बालभारती स्कूल री झाड़-पूंछ करवा रैया हा... सुण'र म्हैं व्याकल सो होयग्यो—ओह, टाबर कठै सूं ल्यासी, आं टेणां रा ढाळां मांय कुण पढण भेजसी?

◆◆

राजस्थानी री आं अखबारां नै ई बांचो अर सदस्य बणो

राजस्थान री पाती (दैनिक)
संपादक : आनन्द कुमार पुरोहित
प्रिंटर हाउस, एच-1-42 डी
रीको, जैसलमेर (राज.)
मो. 9414149245

उज्ज्वल मरुधरा (पखवाड़ियो)
संपादक : सुनिता राजोरिया
8 ए, बैंकर्स कॉलोनी, महाराणा प्रताप
मार्ग, नियर करणी पैलेस, पांच्यावाळा
जयपुर (राज.) मो. 9785415710

सूरतगढ़ टाईम्स (पखवाड़ियो)
संपादक : मनोज कुमार स्वामी
पुराणो बस स्टैंड, सूरतगढ़
जिला-श्रीगंगानगर (राज.) 335804
मो. 9414580960

दैनिक युगपक्ष (साप्ताहक परिशिष्ट)
संपादक : उमेश सक्सेना
एज्युकेशनल प्रेस, फड़ बाजार
बीकानेर (राज.) 334001
मो. 9571283655

किरण राजपुरोहित 'नितिला'

रणछोड़

जदपि गांव उणरै जीव मांय बैठ्यो, कदैई चुप नीं चक्यो पण आजकल कीं भौ भर्‌यो हाहाकार-सो निजर आवै। पैलां जठै सपना मांय गांव में बीत्यै बाळपणै री हंसती-खेलती यादां आवती पण आं दिनां कीं दुख रा दरसाव दीखै। इणी कारण केई दिनां सूं मन मांय घरळ-मरळ। रात नै ई उठ बैठै अर झूंपै मांयकर आभै कानी भाळै। बारै आयनै तारां साम्हीं भाळतो गांव रा समाचार बूझै। गांव अबखायी में है? तारा चुप है, किरत्यां विलमी-सी लुक जावै। बो हींजरै! गांव हींजरै!!

बो खुद ईज गुनैगार है। गांव रो जीव दुखायनै स्हैर उठ आयो हो। तो ई गांव तो फेर ई भलो है जको उण दांई मोहचोर कोनी हुयो। आसीसतो उणनै याद करै अर उणरी याद मांय आवै। बो भलांई गांव छोड आयो पण गांव उणरै मन सूं नीं उतरियो अर ना ई गांव उणनै मन सूं उतार्‌यो। पण याद री तांत पकड़नै कांई बो गांव साम्हीं बावड़्यो? नीं... नीं। उणरो मन गांव रै मन जित्तो मोटो नीं व्है सक्यो। साची पूछो तो पग चिपग्या है अठै। आस मांय डूबती-उतरती लूखी जूण ना तो छोडतां बणै अर ना गांव नै भूलतां बणै। जीव फगत बळतो रैवै आलो छाणो धुकै जियां धुकै। धुकणी धुकै।

उडती-उडती खबरां आवै है कै कीं अजब घट रैयो है देस मांय... सकल दुनिया मांय...। अबकाळै जिसो तो कदैई नीं हुयो। मानखो जलम्यां पछै कांई, धरती जलम्यां पछै ई इसी

सी-139, शास्त्री नगर, जोधपुर (राज.) मो. 7568068844

विपदा तो कदैई नीं आयी कै आखी दुनिया अेकै सागै सदमै मांय पड़ जावै। बडा-बडा देसां मांय लोग मर रैया है। अमीर देस ई जूझ रैया है। ब्रह्मांड माथै राज करण रो सुपनो देखण आळो मिनख साव अणदीसतै जीव साम्हीं निरूपाय हुयोड़ो अेक तरै सूं गोडा ई टेक दिया समझो। खबरां सुणै जका कैवै कै आपणै अठै इणसूं ई भूंडा-माड़ा हाल होसी!

बो बूझणो चावै कै आखी दुनिया मांय उण जैड़ा करोड़ां लोग है जका रात तांइ भी काया रो भाड़ो नीं भर सकै। भूखेरां री आ घटणा कांई अजब कोनी? भूखा पेट लियां मिनख तड़पा तोड़ै—आ दुखदायी घटणा कोनी जकी रोज ई घटै! आ बात सरकार सारू गोडा टेकै जैड़ी कोनी? सदमो कोनी कांइ? पण आंनै किणरै मरणै री परवाह है। कठैई खुद री मौत सूं तो भयभीत नीं हुयग्या अै बडा लोग जका विदेसां मांय इलाज करवा आवै अर अठै रा स्वास्थ्य विभाग में योजनावां चलातां देस रो विकास करै। विकास ई किण भांत रो कै आपरै मेळावा सारू देस नै रैवण लायक भी नीं मानै। पढाई अर बीमारी जोग भी नीं मानै। हां, कोयला-चारो-कोफीन तक खावण सारू औ देस सांतरो है। जचै जियां करो। जनता रो पड़सी, जनता रै नांव सूं आपरै गूंजियां मांय थोकड़ै दियां जावो बस! औ रुळो लोकतंत्र है...।

स्हैर रो रासो देखनै अै बातां मगज मांय भंवै। खासा दिनां सूं मांदो है। कमठै जाय नीं सकै। गोपी अेकली जावै। उणरो जीव ऊंचो-नीचो रैवै। अेकली नै नीं भेजणी चावै पण दोय टाबरां रै पेट रा खाडा तो भरणा ई पड़सी। गोपी तो अेक टाबर ई चावै ही। कैवती कै, ''अेक नै ई पढासां अर चोखो मिनख बणासां। थांरै दांई कमठै रो कीड़ो बणतो नीं जोय सकूं।'' पण बूढी मां री आण ही कै अेक आंख री कांई आख। गोपी घणा ई पग पटक्या, आस गेरण सारू पण जिनगाणी मांय बो अेक काम ईज चोखो करयो कै गोपी रै नीं चावतां थकां ई नीकू नै दुनिया मांय ले आयो। पण आंरी पाळ-पोख भी चोखी करै तद दुनिया में लाणो सारथक हुवै नीं!

...गांव री पुकार छोडनै आवणो कित्तो अबखे हो!

गांव री सरल जिनगाणी में कीं सालां सूं अबखायी निजर आवा लागी ही। जद फगत रोटी चाहीजती, गांव हाजर हो पण आजकालै रोटी सूं केई चीजां बधती चावी हो मेली है। अै वस्त-चीजां आपरै पेट सूं कियां काढै? गांव खुद हायबाय होयो है, स्हैरां री ऊंची चिमनियां, तेज लाईटां, रफ्तार आळी गाड्यां देखनै। केई सालां सूं गांव आसंकै मांय जीवै जद सूं लोग स्हैर साम्हीं लोभी होया है। गांव रै काळजै ऊन्हो पाणी उकळै जद गांवई लोग टीवी-फिल्मां रै हीरो-हिरोईज नी नकल करण लाग्या है। मोट्यार बेटी आंगणै ऊभी देख बाप रो जीव हुवै बिसो ई गांव रो जीव डरपै। आज नीं तो काल विदा करणा ई पड़सी... गांव रै बेटां नैं।

पेटभराई रै कारण गांव छोडनै स्हैर सारू ब्हीर होया। गांव कांकड़ तांई पुगावण आयो। सींव माथै आभो जाणै मोरियो गावै। रूंख-पात उदास हा। चैंवटा रो बड़लो डाळ्यां धरती पर नाख दी ही। सांगणी खेजड़ी साव झीणी हुंवती लूंगा झड़काय दीन्ही ही। नीं जीवण री अरज करती-सी। पुरखां नै दूर देसां भेजण आळी खेजड़ी उणरै म्हैज अहमदाबाद जावण सूं इयां विलमी कियां? भविस कीं अपजोगो है?

गाडी मांय बैठण सूं पैलां अेकर मुड़'र जोयो। खेजड़ी नै नैणां निवण करया। गांव री छियां कांकड़ मांय पछाट खायनै हेठै पड़गी। दांतुड़ जुड़ता-सा लखाया। उणरो मोह जाग्यो पण ठा नीं क्यूं मूंडो फोर लियो। कांई करै! गांव अब उणरी जूण पार नीं पटक सकै। बालपणै खोळै रमाय दियो पण जवानी नीं पाळ सकै। उणरी आस पूरी नीं कर सक्यो। भरपेट रोटी चाईजै। लुगाई नै गांव नीं बिलमाय सक्यो। उणरी मंसा पूरण नीं कर सक्यो अर बो आज अठै वड़ियो (मजूर) है। पेट रै परबस है।

गांव सो-कीं दियो—जलम, नांव, मस्त मलंग बालपण, बडेरा, सागदड़ा, रमतियो, गीत, निरत, भजन, हरजस, साथणियां, वायरो, छियां-तावड़ो, तारां छाई रात, सावण रा डोलर हींडा, चौमासी-भादरवा, जेठी तप, आसाढी, आंधी-भतूळिया, आसोजी उमस, पो रो सियाळो, फागणी मधरी सोरम... गड़ा, मेह, रीळ, पावठ, मावठ... ईश्वर री सैंग लीला देखाई पण लुगाई रो जीव नीं धपा सक्यो। रोटी-मजूरी धकै गांव हारग्यो, खेत वसूंठ नाख दी। जलम सूं मोट्यार होयां तांई गोद्यां रम्यो पण जोधां रो भार गांव सूं झिल्यो कोनी।

केई विपदा, काळ, दुकाळ, छपना काळ सूं गांव बारै नीसरग्यो अर पाछा पग रोप्या, पांगरयो पण इण जुग मांय जठै लोकतंत्र है, गांव मगसो पड़्यो तो खतम हुंवतो ई निजर आवै। इतिहास रो भार गांव मजै सूं सांभतो चाल्यो पण इण जुग में मिनख घणो विकास करयो है। अब जद गांव रो भार जोधां नै झेलणो चाईजतो तद जोधा गोधां सूं ई निकांमा लखाया।

आं दिनां काळ पड़ै जद तो सरकार धान-चून मुफत में देय देवै पण रुजगारी री खांध नीं देय सकै, जिणसूं जूणगाडी झप्पकाक देंवती चाल पड़ै। स्कूल नीं देय सकै जठै टाबर फर्राट इंग्लिश बोलै। अैड़ी हवा नीं देय सकै जठै गोपी सैट हुय सकै। सिनेमा नीं देय सकै जठै अधनागी लुगायां मटकै अर रोपळ रासा नीं दे सकै जठै बेखौफ मनमरजी री मौजां कर सकै। गांव बडेरां दांई आज भी जोधां पर निगैदासती राखै पण बै अब निसंक उडणी चावै। गांव री टोकाटोकी कोनी चाईजै।

खुद ई रस्तो देख लेस्यां...

गोपी अहमदाबाद री हवा खायोड़ी। गांव नै अंगैई नीं चावै। उणरा माईत कोई समै मजूरी सारू गया। कीं साल चोखी कमाई करनै पाछा गांव ई आ जासी। बूढा होवता मां-बाप गांव में है, छोड्यां नीं सरै। पण जूण-जुगाड़ी करता उमर उठै ईज गाळ दी। कीं

ठायो-ठीयो नीं मांड सक्या। उमर भर कमठा री चौकीदारी करता रैया। कमठो चालतो जित्तै साल-दो साल रो ठीयो अर पाछो गाडोलिया लुहार। ना टाबर पढ्या, ना पग जम्या। जणिया जका तो बरस-दिन खायां मोटा होवणा ईज हा। आस री रास माथै बरस काढ्या पण होयो कीं नीं। कीं ईज थाग नीं लाधो। कमायो जको गियो। उमर बधी, टाबर मोटा होया तद तांई अखबारां मांय देस मोकळी प्रगति करी। जीडीपी बधती रैयी, बंगला चिणीजता रैया अर बरस रा आंक वायरै सागै उडता गया।

इण बिचाळै गोपी स्हैर री हवा खावती रैयी—देखती रैयी। स्कूल रो सरतन कदैई नीं कर सक्या। पढा नीं सक्या पण अठी-उठी बंगलै में रमती मोटी हुयगी। मालकण रै टाबरां रा उतर्‌या-फुतर्‌या गाभा रूपाळी गोपी माथै खूब फाबता। पुतरन रो परवान देख मालकणां हैरान होय जावती। कीं तो उणरो चंचळ सुभाव भी हो कै मालकणियां रै झट हियै चढ जावती। दोय-चार काम काढ देंवती तो बै अणूती राजी। उण घर री बेटियां री सहेली बणनै कूलर री हवा खावती, कदैई स्कूटी माथै फिरती, कदैई चोखो जीमण भी हाथ आय जावतो। बिसी ई बातां अर बिसा ई ख्वाब भी पल्लै बांध बैठी। राह-रीत ई टैमसर निभाणी पड़ै पण नाहर रै मूंडै लोही लागग्यो हो। माईतां री सरधा कोनी कै स्हैर रै छोरां नै बेटी देय सकै। स्हैर आळां री मुंहमांगी रकम कठा सूं लावै—जद रोट्यां रा ई फोड़ा पड़ै। भलांई छोरा कारीगरी रो काम करै, रंग-रोगन रो पण मांग रो मूंडो मोटो राखै। आफळ्यो तो घणोई कै छोरी नै स्हैर में ईज थालै पटक नाखै पण काम सर्‌यो ई कोनी।

आभै मांय ई नीं समाई अर कीं ऊंच-नीच री बातां देखी जणै छेवट फेरो देवणो पड़्यो। ''गांव रै छोरै सूं नीं परणीजूं'' इण बात पर घणाई रोवा-कूका कर्‌या पण ठेकेदार रै सागै मस्ती-ठिठोळ्यां करतां देख्यां पछै तो जेज ईज नीं करी अर गांव लेजाय अर परणावतो दीस्यो। पेट मांय दाणा है कै नीं, कुण देखै पण इज्जत रा कांकरा नीं हुवण दिया।

...उणनै ई गोपी अर गांव रै बिचाळै हींडता करतां छेवट अहमदाबाद आवणो पड़्यो। सड़क किनारै अेक झूंपो उणरो ई मंडग्यो पण पछै बो कदैई मन-भर हंस नीं सक्यो। मां सदमै मांय ईज ही जद गांव छोड्यो। उणरी मौत पर जा ई नीं सक्यो। मूंडो कियां देखातो गांव नै, गांवआळां नै। गोपी औ ईज तो चावै ही।

...अब नित नूंवी खबरां आवै। उणरो जीव बैठतो जावै। कांई होयसी ठा नीं। कुण जाणै? हे रामजी! थूं ई रुखाळो। इयां तो मानखै नै समझणो दोरो है पण फेर भी मिनख घणकरी चोखी यादां नै ईज तो याद करै। विगत सुख नै अब झुरै अर असांयत होवै। बीत्यै सुख नै बखाणतो कीं जी-सोरो करै, उण रा मंडाण करनै राजी होवै। सोरप या दोरप रा चितराम विगत में चाहै जिण भांत होया हा, अब लोगां साम्हीं उणरा भांत-भंतीला चितराम खांचै अर सागै ई कीं अतीव बातां रो भेळ कर्‌यां बगर रैवीजै कोनी। यादां नै झुरतो डील पींजर हुंवतो गयो। जीव री गुनैगारी जक नीं लेवण देवै।

गांवड़ियो अस्टपौर चितार आवै। आजकालै खेतलोजी आळी खेजड़ी घणी चितार आवै। ब्याव-बिड़द उठै घूघरी चढती। जागीरदारां रै ब्याव में मोटो खेतलो पूजीजता। मौजां हुंवती बांरै। उनाळू खोखा खावता अर रमतिया रमता। उण खेजड़ी सूं घणो हेत हो उण टोळी रो। गांव सूं ब्हीर हुयो जद खेजड़ी नै धोक देय आयो हो। खेजड़ी सूंसाट करती झुरती रैयी। बा ईज खेजड़ी दीसै अब। खेजड़ी ऊंडो हेलो पाड़ै अर बो धांसतो बेकल हुय जावै। खेजड़ी री बात गोपी नै कैवै तो गोपी आंख्यां तरेरै। टाबर खेजड़ी देखी नीं। उणां नै कियां समझावै कै बिरख आपणा देवता है। बै खीं-खीं दांतिया काढै तद बो रीसां बळै। पण बांरो कांई दोस? कदैई खेजड़ी रा दरसण कराया? नईं तो पछै!

साच्यां ई। बो भारी दोसी है। अर धांस बधती जावै। खेजड़ी सुपनो ई नीं, दिन री जोत मांय सांप्रत दिखै आजकाल। कीं अणहोणी हुयसी कांई? आ जूण मोटी अणहोणी है। इणसूं इधक कांई दुख होसी।

गोपी अर टाबर केई अर केई खबरां सुण'र आवै। मिनखां सूं आंतरै रैवणो, अळगा सूं बात करणी, छूताछूत रो रोग दुनिया में पसरग्यो है। बो हंसतो। अरे! टाबरां आपणै गांव में तो इयां ई नाळी, मैला साफ करणिया सूं लोग आंतरै ईज रैवै। इणमें कांई नवादी बात? पण बा बात सुणनै बै हंसै कोनी। बांरा मूंडा धवळा धप्प पड़्या है। केई खबरां चालै। कांव-कांव करता लोग ब गांव-गांव करै। बरसां पैलां गांव सबद उच्चारणो भूल्या लोग अंतिम आस में गांव री दिस जोवै। गांव में चाणचक कांई खजानो निजर आयो? बो धांसतो दोलड़ो हुय जावै। खेजड़ी लुळ-लुळ जमीं पड़ै।

गोपी आंख्यां फाड़्यां जोवै। कांई ठाह कांई विचारां में पजी है। हाहाकार मच्यो है। आसै-पासै रा गरीब-गुरबा पोटली लेय चल्या गया। गोपी गांव नीं जाणी चावै। गांव रै नांव सूं ई बा दोहरी मार मर रैयी है अर बो...। गांव किण मूंडै जावै?

गोपी झूंपा में बड़तां ई गाभां री पोटळी बांधी। टाबरां नै कैयो, ''ब्हीर होवो, गांव चालां!''

टाबरां नै गांठां देय बारै भेज्या। खेस ओढाय उणनै ई गोपी ब्हीर कर्‌यो पण बो किण मूंडै पाछो जावै। गांव री औगत मन सूं उतरी ई कोनी अर अब इयां कायर री भांत मरतो-डरतो गांव नीं जा सकै। गांव अर मायड़भौम खातर मरणो ई मरणो है। इयां रणछोड़'र? ना-ना! इणसूं तो चोखो है बो...।

खेजड़ी रै सारकर पगां पाटा बांध्या, रोवता-रींकता, फाटा गाभा, अळवाणां पगां टोळै रो टोळो नीसरै। गांव खेजड़ी कनै आय आपणा नै अडीकै। कांई ठा इण मिस ई उणरा जोधा ई भूल-भटकनै सिंझ्या रा घरां आवता हुवैला अर गांव नै नीं ओळख्या तो धकै बध जासी। खेजड़ी खेंखाट वायरा सागै बांनै रोक लेसी। चिंता बासी अडीकती ऊंची होय-होयनै पंथड़ो जोवती रैयी...।

◆◆

एस. एस. पंवार

पाप

बो आपरो झोळियो गोपी चपड़ासी नै पकड़ायो, 'ल्यो धरल्यो, तड़कै ले लेस्यूं।'

आ फकत अेक दिन री बात नईं ही। घणकरीक बारी बो स्कूल लारै भटक'र आवै अर छुट्टी होवती बेळा दो बजे झोळियो गोपी नै पकड़ा देंवतो। गोपी बीं रो झोळो क्यूं पकड़तो। इणरै पीछै री कहाणी भी मेरै कनै ठाई है। क्यूंकै गोपी कई बारी बीं कनै सूं बीड़ी मंगवावतो। कदै-कदै स्कूल में दूध मंगवावतो। बो इस्या कामां खातर आगै रैवतो। कीं रो टाबर पढै अर कीं रो फितूर फिरै बीं सूं गोपी नै के लेवणो! बो तो फकत आपरै काम आयेड़ै अैसान रो हिसाब चुकावै। इण भांत फकत मोडियै रो ई नीं, दीपियै, काळियै, नेनू वाळै मांडियै अर हरजी वाळै झालूड़ै रो झोळो ई गोपी राख लेंवतो। अै सब सरकारी स्कूल री सातवीं क्लास रा छंटवा टाबर। जकां रै बारै में और कीं बतावण री जरूत नईं है।

बो घरै आयो। आगळ हटाई। घरै कोई कोनी। घरगा खेत जारया हा। सावणी काटण रा दिन। अकास में हळकी-सी बादळवाई। पून चालै। बांरो घर पैली इस्यो नईं हो, जिस्यो आज है। न इस्यो गेट, न पक्कोड़ो कमरो, न ई न्हावणघर उतराधी कूंट में हो। फकत दोय कोठिया हा मांय। बै ई कच्चा। अेक में सोवता। अेक तूड़ी वाळो हो ई। नीमड़ी घर रै बीचै नईं होवती। पासै ही। निहालै री घर री भींत कनै। निहालो बेचग्यो मकाम। नीमड़ी आंगण रै बीचै आयगी। पैलां अठै खूडो होवतो, जठै अब न्हावणघर है। खूडै में होवता कूकड़िया अर बांरा बचिया।

ग्राम पोस्ट : पीळी मंदोरी, वाया : भट्टू कलां, जिला : फतेहाबाद (हरियाणा) 125053 मो. 9017738638

 ISSN : 2320-0995

बण जावतां ई खूडै आगै सूं फट्टी हटाई। पक-पक-पक-पक करता मुरगलो-मुरगली, अर बांरा नैना-नैना बचिया बारै निकळ्या। उण माटी री कूंडी में पाणी मेल्यो, जकी में रोज मेलता। अेक-दो मंझलै आकार रा चूजियां पीयो। मुरगलो-मुरगली तो बै जाय बै जाय! डांगरां रै ठांणां कानी भाज्या बगै। मुरगलो तो मुरगली रै लारै पड़ग्यो। दे चांचां पर चांचां मुरगली रै ऊपरली कलंगी लोही-झराण कर नाखी।

पक-पक-पक-पक... ठांण कनै मुरगली नै दाब लीन्ही अर ऊपर बैठग्यो। मुरगली धक्कै सूं छुटाय'र अळगी होयगी। मुरगली बीं सूं और आगै भाजगी। बो बियां ई लारै। करतां-करतां पाछा खूडै कानी आयग्या। मोडियो बांनै देखै। बियां स्कूल में नांव तो बींरो प्रहलाद हो, पण म्हे मोडियो ई कैवता। मोडियै निजर जोड़ राखी। मुरगलै भळै बींनै जचाय'र दाब लीनी। ऊपर चढग्यो। अबकाळै कामयाब होयग्यो। मुरगलै रै उतरतां ई मुरगली छिणेक धूजी। धूज'र बण आपरै डील रो पिछलो हिस्सो और लारै काढ्यो। बण बींठ करी। खांदां री ज्यूं पांखड़्यां अेकर ऊंची करी। अर अबार पांख पूरी खोल दिन्ही, सरीर रा सै पांख अेकर-अेकर तो फुलावट में आया अर फेर बण पूरै सरीर नै फड़फड़ायो।

मोडियो मड्डै पर बैठ्यो अै सारा किरियाकळाप ध्यान स्यूं देखै। बो और ई कल्पनालोक में खोय रैयो हो। खुद नै लेय'र बीं रै दिमाग में और ई चितराम मंडै अर धुड़ै। बण मुरगली नै बींठ करता थकां गौर सूं देखी। बण ईंडै रै आकार री अर बीं री मोटाई री कल्पना करी अर खुद री मूमली रै आकार रै बारै चींत्यो। इत्तो मोटो ईंडो ई निकळ्यै... नीचलो होट दांतरी स्यूं दाब'र बींनै छोडता थकां बीं रै मूंडै पर हळकी-सी मुळकाण मंडी। लिलाड़ पर आयेड़ै छज्जै रै केसां नै हाथ सूं अेक पासै करता थकां बो खड़्यो होयग्यो।

उण बारै बारणै कानी देख्यो अर पाड़ोस रै घरां में ई किणी रै न होवण रो अंदाजो लगायो। ईं टैम कोई पड़ोसी बां रै घरां नीं आवै। बो बारणै कनै जाय'र बारणियै रै अेक आडो क्याड़ लगा दियो जिको रात री टैम गंडकां रै नीं आवण सारू लगायो जावतो अमूमन।

बो मुरगली रै लारै पड़्यो। मुरगली आगै अर बो लारै। बा कदी डांगरां रै पगार कानी जावती रैवै, तो कदी गेट कानी आय जावै। कदी नीमड़ी कनै पड़्यै पावड़ियै तळैकर निकळ्यै। भाजतां-भाजतां हारै कनै बण झाल लिन्ही। मुरगली पांख मारै, बो पांखां नै सागै पकड़ लिन्या अर मुरगली नै तूड़ीवाळै में लेयग्यो। बण पजामियै रो नाळियो खोल लियो। पजामियो बीं रै गिट्टां कनै भेळो होय'र पड़ग्यो। मुरगली सेंतरी-मेंतरी होयरी। स्यात बीं नै इयां लागै हो कै तूं कठै आयगी आज। आ जिग्यां बीं खातर नूंवी ही। क्यूंकै तूड़ी वाळै कोठियै रै बारणै आगै बाठा लगायेड़ा। कोई मुरगा-मुरगी कदैई बठै परवेस नई कर सकै हा।

फड़फड़फड़फड़... पांख्यां रो जोरगो फड़फड़ाट।

पोऽपोऽपोऽपोक-पोक-पोअअअअक दोयेक मिनट पछै तूड़ी वाळै कोठै सूं आवाज आई।

बाकी सै जिनावर सेंतरा-मेंतरा होयग्या। स्यात इसी आवाज बां आपरै इण खूडै में रैवण रै इतिहास में कदेई नईं सुणी होवै। बिल्लियां रै बोलण अर लड़ण री आवाज सूं भी कदे आं चूजियां नै सेंतरा होया कोनी देख्या। मुरगली नाड़ गेर दी। पांख ढीला छोड़ दिन्या।

मोडियै बीं नै आंगणै ल्या'र फेंकी। मुरगली उड'र धरती कोनी उतरी। बीं रै पंजियां में आज ज्यान को ही नीं। मोडियै री आ बात तो परखेड़ी ही कै कई बार जद बो कोई मुरगै या मुरगी नै जरूत सारू पकड़तो अर बांनै पाछा छोडतो जद बै पांख फड़फड़ाय'र पंजां रै सत रै बळ धरती उतरया करता। आज इस्यो कोनी होयो। आज पंजियां रै साथै बीं रो पेट ई धरती टिक्यो।

नीचै गेरतां ई बण देख्यो कै मुरगली रा पांख लटकग्या। दोनू पासै पांख धरती भिड़ै। बा होळै-होळै पग धरै। इयां लागै बीं रै सरीर में ज्यान आधी ई बची होवै। बा चालै अर बैठज्यै। चालै अर बैठज्यै। बींठ करण री ज्यूं सरीर न खेंचै, पर बींठ करै नईं। बींठ करण वाळी जिग्यां खून रो अेक बुलबुलो-सो चिपरयो अर गुद्दी रा फूसका-सा, रेतो।

बो देखै। आज इयां कूकर है। टींगर रो काळजो हालग्यो। आ के होई रे! मर न ज्यै कदे। बाबो आवतां ई पूछसी। तो के जवाब देस्यूं! बण बीं रै आगै पाणी री कुंडी मेली। मुरगली टैं कोन दी। बण हाथ में बाजरी रा दाणा लेय'र आगै करया। मुरगली री नजर सूं सावचेतपणो ई जावतो रैयो, बीं नै किणरै बाप रा दाणा दिखै हा। बण लसण अर कांदा रा छूंतका भळै नाख पिताया, पण कठैई कामयाबी हाथ लागती नईं दीसी।

साढेक च्यार रो टैम। ईं टैम रोज डांगरां नै नीरण सारू बाबो खेत सूं घरै आवै। बो बाबै रै आवण सूं पैलां ई जिनावरां नै पाछा खूडै बाड़ दिन्या। गेट कनै सूं क्याड़ हटा दियो। बाबो आज पोणै-पांचेक रै ओड़ै-जोड़ै आया।

आवतां ई बां हमेस री भांत आज ई खूडै री फट्टी हटाई, ''अरे मोडिया, आंनै कीं पाणी-पूणी धरयो के स्कूल सूं आय'र?'' बाबै हेलो-सो मारता थकां कैयो। इतराक में बो ई कन्नै आयग्यो।

''अहां, म्हैं घाल्यो तो हो बाबा पाणी।'' बीं रो काळजो फड़क-फड़क करै। साथै ई बो देखै हो कै दड़बो खोलतां ई जिका जानवर पैलां बारै आया बां में बा मुरगी कोनी दीसी। बीं रो ध्यान फकत बीं पर ई हो। बो चीज गमेड़ो-सो होरयो। बण देख्यो कै मुरगली सैं सूं लास्ट में बारै आई होळै-होळै चालती। बा खूडै रै गेट कनै ई बैठगी।

''ईं रै के होग्यो रे मोडिया, इयूं पांखड़ा कूकर गेर राख्या है इण, कोई बीमारी आयगी के?'' बाबै चिंता रै सबदां में अेक साथै ई तीन सवालां रो सवाल कर नाख्यो अर आपरी धुन में ईज मुरगली कानी देखता रैया।

''हो सकै बबा!'' बो लारगी लार बात नै सारो देवण सारू बात कैयी।

बाबै मुरगली नै चक'र देखी। चांच पाड़'र भळै देखी। पंजा-पांख सो-कीं देख लिन्यो। बाबै नै कीं नुकस नजर नईं आयो। बाबै दाणा गेरया। बण नईं खाया। बाबै सै साराफोरी कर'र देख लिन्ही। बात कोनी बणी। बणै के ही, मुरगली रो हंसलो उडण नै होरयो हो।

थावर हो। जुल्मी दिन। इण हिरको थावर स्यात इण घर अर खूडै रै पांती कदेई नईं आयो हुवैलो। घर री इण दीवारां रै इतिहास में खूडो बण्यै नै सवा दो साल हुयग्या। कित्ता ई इंडा रेड़ी बिकग्या हुवैला, कित्ता ई चूजा मोल होयग्या, कटण सारू भी मुरगा भाव रा भाव बिक चक्कू रै भेंट चढ चूल्लै उबळग्या, पण मुरगां री मौत रै आं खेलां मांय आज बरगी वीभत्स चीत्कार अर अैड़ो आर्तनाद कदेई आं दीवारां अर पंछियां नईं सुण्यो हो। ना कदे कोई मुरगी इण भांत निस्प्राण होई हुवैली। स्यात कोई चूजै अर मुरगै री मां री मौत रो आथणगो अैड़ो होयो ईज नईं हुवैलो।

चौबीस घंटा रै अन्न-पाणी त्याग रै आगलै दिन ज्यूं ई दोफारो ढळ्यो, मुरगली आखरी नाड़ गेर दिन्ही। फेर कदेई न चकीजण वाळी नाड़। बाबै कनै आखरी विकल्प हो। बां सिंझ्या नै उबाळ दिन्ही। क्यूंकै कोई बीमारी रा संकेत नईं हा। एक्सीडेंटल केसां में चिकन बणावण रो काम बाबो कर ईज लेंवता।

आगलै दिन स्कूल में गोपी कनै सूं झोळो लेवण रै बाद काळियै रै कानां अै सबद पड़ै, ''म्हैं बा सब्जी कोनी खायी यार! म्हैं आज तांई कदेई सब्जी री टाळ नईं करी हुवैली, पण रात वाळी सब्जी मेरै गळै कोनी उतरी यार! बा तो सजगी चोदया, कीं नै ई ठा कोनी पड़्यो। नईं तो मेरी मौत ही। बाबो खा ज्यार म्हनैं काचै नै। खेती री तरियां सम्हाळ करै बाबो। पण... म्हनैं इयां लागै भाईजी! म्हैं पाप कर दियो। भोत मोटो पाप!''

◆◆

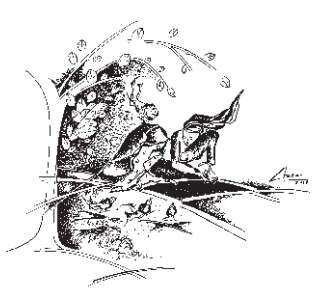

मंजू शर्मा जांगिड़ 'मनी'

हूंस

पाराया पगां बैवती
मारग मांय रैवती

निमण जोड़ी पगां री
ऊंची अैडी न्हांवती

गेलै-गेलै जावती नै
डांडी निजर आवती

हूंस घणी हियै मांय
दिन-रात अेक करती

तेवड़िया कारज जदै
पल में पूरण करती।

◆◆

प्रीत

मौन रैवै आ धरती
सूरज घणी तपावै

तेज बळती लपटां सूं
इंदर आय बचावै

धरती री आस पुरावै
बिरखा घणी लावै

झिरमिर झिरमिर मेह
लाय मन री पुरावै

रीत प्रीत री डोर गैरी
इंदर सदा निभावै

धरती अर आभै रो नेह
सगळां नै हरखावै।

◆◆

14, मनी विला, एक्सटेंसन स्कीम, भगत री कोठी, न्यू पाली रोड, जोधपुर 342005 (राज.) मो. 9414128465

 ISSN : 2320-0995

कल्याण सिंह शेखावत

आत्म विवेचन

आत्म विवेचन करतां पायो, भीतरलै पसरयो सरणाटो
आवण आळी आशंकावां!

रोळा-बेदा में नीरवता, आ होठां पे दस्तक देवै
भीतर बैठी चुप्पी डाकण, चेहरा की आभा हर लेवै
कदे गया पल काटण लागै, कदे खुशी में दीप जळावां!

पावनता को नांव जिंदगी, कदे पाप की भारी गठड़ी
मौन साधना की समिधावां, मुखर हुई कद गूंगी-बहरी
विचरण करती मन आंगण में, पुरवा जैड़ी अभिलाषावां!

जनक दुलारी महलां बसती, जंगळ-जंगळ फिरै भटकती
जग का मालिक रामचंद्रजी, पग-पग ठगणी माया ठगती
सुचिता सूं पुज गई कठै तो, कदै छळी है मर्यादावां!

निष्ठुर समै बजा रणभेरी, होणी नै अणहोणी कर दे
कदे लगी मुट्ठी में दुनिया, कदे हवा में सै क्युं चल दे
कदे आत्म संतुष्टि संग रह, सहज सुलभ मिलज्या सुविधावां!

◆◆

39-उमा पथ, रामनगर, सोडाला, जयपुर-302019 मो. 9116404149

गौरीशंकर शर्मा 'भावुक'

थे पैल्यां चलग्या सुख पाया

जे थांसूं पैल्यां चल ज्यांती, तो अमर सुहागण हो लेंती
थे रो लेता दो च्यार बरस, म्हैं तो बडभागण हो लेंती
पण जीणूं मरणूं किण सारै, कुण जाणै कद छुटसी काया
थे पैल्यां चलग्या सुख पाया!

बडको बेटो कद मुंह बोल्यो, बो काल पुरसग्यो अणतोल्यो
बीती बातां बो भूल गयो, म्हैं खूणै बैठ भलां रोल्यो
बो बीनणती रो धर गुलाम, अब रोज चढा लेवै छाया
थे पैल्यां चलग्या सुख पाया!

बो काल चाय को कयो जणां, बा खड़ी होयगी तांण-फणा
झठ थैलो लेय बजार गई, इब रंग दिखावै घणा-घणा
नितका गूंथै बा नूंवा जाळ, कर लेसी इब चित रा चाया
थे पैल्यां चलग्या सुख पाया!

अै धणी लुगाई बतळावै, गुरबुर गुरबुर करता जावै
म्हारै कीं पल्लै पड़ै नहीं, पण देख-देख हंसता जावै
बै सुंवां कदै बोलै कोनी, गाता रैवै डोढा ढाया
थे पैल्यां चलग्या सुख पाया!

अशोक स्तंभ रै कनै, छापर (राजस्थान) मो. 9928787125

 ISSN : 2320-0995

पल्लै में टक्को रयो नईं, मुंग्याड़ो ओजूं गयो नईं
धाबळियो होग्यो लीर-लीर, किणनै भी ओजूं कयो नईं
म्हैं हंसकर दांत दिखावूं हूं, सोचूं हूं पूत भला जाया
थे पैल्यां चलग्या सुख पाया!

बा काल नानकी आई ही, गीगै नै सागै ल्याई ही
साड़ी कब्जो भी दियो नईं, आंख्यां दोन्यूं भर आई ही
सासू नै जाकर कै कहसी, कै पीरा'ळा काठा धाया
थे पैल्यां चलग्या सुख पाया!

बीं छोटकियै री घरआळी, बडकी नै काढै ही गाळी
दोन्यां रै बरगां बैर पड़्यो, दोनूं ई काळी कंकाळी
अै सातूं सिंझ्या सिर फोड़ै, सागै लै ज्यासी धन-माया
थे पैल्यां चलग्या सुख पाया!

औ पीर-सासरै काळ पड़्यो, पण घड़ो पाप रो नईं भरयो
म्हैं कताक काळा चाब्या हा, औ राम मनैं कैंया बिसरयो
थोड़ा दिन ओजूं देखूं हूं, जमदूत फेर करस्यूं ठाया
थे पैल्यां चलग्या सुख पाया!

तूं जायां मुस्कल हो ज्यासी

दोन्यूं छोरा मुंह नीं बोलै, बीनणत्यां नित छाती छोलै
बड़-बड़ करती रोट्यां पोवै, बोल सुणावै होळै-होळै
रोटी तो घालैली पण बा, म्हारै तो अम्मल हो ज्यासी
म्हारै सागै छळ हो ज्यासी, तूं जायां मुस्कल हो ज्यासी

बेटा सार बहुआं री खांचै, बूढलियां री तिथ कुण बांचै
जे गलती सूं कह द्यां क्यूं तो, नौ-नौ ताल मींडक्यां नाचै
मूंडो खोल्यां लाज मरांला, गांव-गळी में गल हो ज्यासी
म्हारै सागै छळ हो ज्यासी, तूं जायां मुस्कल हो ज्यासी

जदै-कदै छोरी आवैली, सासरियै पाछी जावैली
कुण बाई नै लगा काळजै, मन री बातां समझावैली
सोच-सोच हिवड़ो भर ज्यावै, मण-मण रा बै पल हो ज्यासी
म्हारै सागै छळ हो ज्यासी, तूं जायां मुस्कल हो ज्यासी

तीज तिंवारां मेळा होसी, ब्याह-शादी सै भेळा होसी
सजधज बण-ठण गीत गाळ का, और घणा ई रैला होसी
म्हारै तूं साचकलो सोनूं, बां रै तूं पीतळ हो ज्यासी
म्हारै सागै छळ हो ज्यासी, तूं जायां मुस्कल हो ज्यासी

धणी बिन्या सूनी ज्यूं गायां, दरखत ज्यूं सूना बिन छायां
बूढै बारै कुण बतळावै, जिणरै लारै नहीं लुगायां
हरया भरया अै खेत सुहाणा, म्हारै तो जंगळ हो ज्यासी
म्हारै सागै छळ हो ज्यासी, तूं जायां मुस्कल हो ज्यासी

◆◆

राजस्थानी री आं पत्र-पत्रिकावां नै ई बांचो अर सदस्य बणो

हथाई (तिमाही)
संपादक : भरत ओळा
37, सेक्टर नं. 5
नोहर (हनुमानगढ़) राज. 335504
मो. 9414503130

कथेसर (तिमाही)
संपादक : रामस्वरूप किसान
ग्राम-पो. परलीका, तहसील-नोहर
जिला-हनुमानगढ़ (राज.) 335504
मो. 9166734004

रूड़ो राजस्थान (मासिक)
संपादक : डॉ. सुखदेव राव
डी-14, रामेश्वर नगर
जोधपुर (राज.)
मो. 8619050550

राजस्थानी वाणी (ई पत्रिका)
संपादक : डॉ. चेतन स्वामी
काळू बास, श्रीडूंगरगढ़ (बीकानेर)
राजस्थान 331803
मो. 9461037562

ISSN : 2320-0995

डॉ. शंकरलाल स्वामी

(1)
चानणो दीखै
पूरब खितिज में
दिन ऊगसी।

(2)
धरम धारै
करम बिसरावै
साव अग्यानी।

(3)
राजनेता है
निजर ऊंची राखै
जमीन थोथी।

(4)
कठैई जावो
कपट ई कपट
ठग ई ठग।

(5)
दिवाळी आई
मजूर उणमणो
लुगाई सैणी।

(6)
मन बुझग्यो
आ ईज मिरतु है
बेताळ कांधै।

(7)
टूणा-टोटका
अंधविस्वास पाळै
जिंदगी गाळै।

(8)
रस्तो छोड दै
बै जातरी भटकै
मायावी जग।

(9)
घणो बोलाक
संकट नै बुलावै
टाट भंगावै।

(10)
मिनख दुखी
मोबाइल फोन सूं
फेंकै कोयनी।

नत्थूसर गेट रै बारै, लाली बाई बगेची सूं आगै, मुरलीधर व्यास नगर रोड, बीकानेर मो. 7597743286

(11)
सामनै मौत
विकराळ प्रकृति
आस्था रो बळ।

(12)
प्रमाणपत्र
बैग में लियां फिरै
नौकरी कठै!

(13)
सेवा तो करी
आस पूरी नीं हुई
किस्मत माड़ी।

(14)
मेह बरस्यो
करसो राजी हुयो
टाबर डूबग्यो।

(15)
चोर लुटेरा
घर में ई बैठा है
सोधतो फिरै।

(16)
परजा जाग्यां
देस जीवतो रैवै
नीं तो विणास।

(17)
मानखो कठै
आखो गांव डूबग्यो
खेत उडीकै।

(18)
कीं नीं करै बो
मात्र हेराफेरी रै
घणोई सोरो।

(19)
सूधो मिनख
ठौड़-ठौड़ ठगीजै
पण बो जाणै।

(20)
मीरा तुलसी
भगवान भरोसै
जीवता रैया।

(21)
मन चंचल
सदा भागतो रैवै
जंजाळ में भी।

◆◆

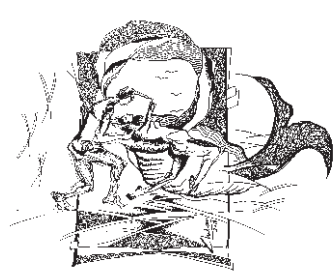

ISSN : 2320-0995

रतनसिंह चांपावत (रणसी)

रंग रा दूहा

शीश मुकट सम सोवणो, पेच भलो पिचरंग।
मान बधावै मोकळो, रंग ज साफा रंग।। 1।।
आडो फिर फिर अड़थड़ै, मस्तक चढै मतंग।
सामधरम सब सूं सिरै, घोड़ां नै घण रंग।। 2।।
झाटक जबरी झेलता, जितण झुझारां जंग।
दीठ रुखाळा देह रा, रंग बखतरां रंग।। 3।।
आन बान राखै अखंड, सूरां रै नित संग।
त्राटक तीखी तेग तूं, रंग रणथळी रंग।। 4।।
बाढाळी बढ बैवती, आडाळी अड़ अंग।
तलवारां घण तोड़ती, रूड़ी ढालां रंग।। 5।।
धार अणी धवळी घणी, पळकै पीठ पमंग।
वाल्हो लागै वीर नै, नेजा नै नवरंग।। 6।।
सबद बाण भल साधियो, पिरथीराज प्रसंग।
गौरी गुड़ियो गोखड़ै, रंग सरासन रंग।। 7।।
गोळी लगतां ही गुड़ै, चमू चढी चतुरंग।
सधै निसाणां सांतरा, रे बंदूकां रग।। 8।।
कर सूं सीधी काळजै, ढाबण रो नहीं ढंग।
व्हारू रे हत्थ वल्लभी, जमदण नै जसरंग।। 9।।
दसूं दिसा में दिव्यतम, निकळै नाद निहंग।
निवण करूंह सुघोष नै, रूड़ा देय'र रंग।। 10।।

221, 'अमर आशीष', मार्ग सं. 19, हनुवंत 'बी', बीजेएस कॉलोनी, जोधपुर मो. 9413139341

कम्पै कायर काळजा, दुस्मण व्हैजा दंग।
रण में गूंजै घोर रव, रंग नक्कारा रंग।। 11।।
आम छाछ दहि आमली, शरबत कुल्फी संग।
पासा चौपड़ पोळ में, रंग उनाळा रंग।। 12।।
बाहविया बोलै बहुत, मीठा मोर मलंग।
इंदर राजा उनमियो, बरसाळा बहुरंग।। 13।।
जीमण ताता जीमणा, ओढण गाभो अंग।
संधीणा हद सांवठा, रंग सियाळा रंग।। 14।।
मदछकियो मारू मुदै, साईनां रै संग।
मदरातां हद मोवणी, पड़वा नै पण रंग।। 15।।
ढाळूं हिंगळू ढोलिया, पौढै भंवर पलंग।
झीणो बाव झुलावती, रहे बींजणी रंग।। 16।।
राचण राजल रसवती, सोजतणी शुभ रंग।
सौभागण शोभा घणी, मैंदी नै मह रंग।। 17।।
चौपड़ियो मिल चूड़लो, सखियां रंग सुरंग।
मंगळदाय मजीठ नै, रमणी दीन्हा रंग।। 18।।
केश औसरै कामणी, कंचन मुक्ता कंग।
शिव चूड़ा में चंद्र सम, रे औसरणी रंग।। 19।।
सुख उपजत मुख जोयकर, तन में उठै तरंग।
रमणी निरखै रूप नै, रंग आरसी रंग।। 20।।
बेलीड़ा मिल बैठिया, उर में उठी उमंग।
खाणा-पीणा खरचणा, रंग हथाई रंग।। 21।।
ठकराई हद ठाठ री, कुड़ कुड़ करत कड़ंग।
पंच तत्त्व परतख परस, रंग रे होका रंग।। 22।।
रस भीजै सब रंग में, हाका कर हुड़दंग।
फागण गावण फूटरा, रंग होळी नै रंग।। 23।।

◆◆

ISSN : 2320-0995

राजस्थली, जुलाई-सितम्बर, 2022 (अंक : 156) रजि. नं. 31319/77 ISSN : 2320-0995

देश की धड़कन राजस्थान की शान **राजस्थली** की यही पहचान

- हम जीवन में बीसियों तरह के व्यसन–शौक पालते हैं परन्तु पढ़ने की आदत नहीं डालते। यही कारण है कि हम अपनी सांस्कृतिक पहचान, शख्सियत और वजूद को संरक्षित नहीं रख पा रहे हैं।
- राजस्थानी ही वह भाषा है जिसकी लोरियों तले हमारा बचपन खेला, कूदा और बड़ा हुआ है। अपने पांवों पर खड़ा होने के बाद ममत्व और वात्सल्य को भुलाना तो हमारी परम्परा नहीं रही है। तो फिर हम क्यों भूल रहे हैं हमारी बाल–सुलभ जिज्ञासाओं को अनथक शांत करने वाली इस मायड़ को ?
- आईये ! हम भी बंगाल की तरह हमारे घरेलू बजट में पत्र–पत्रिकाओं को शामिल कर अपने बच्चों को एक सद्–संस्कार दें। परिवार को अपना वाजिब हक दें। अपने गैर–जरूरी खर्चों में कटौती कर पीढ़ियों को संस्कारित करने के इस अनुष्ठान में सहयोगी बनें।
- आज ही **राजस्थली** के सदस्य बनें और बनायें। पत्र–पत्रिकाओं को सहयोग और उनका संरक्षण हमारी नैतिक जिम्मेदारी है।

आओ ! **राजस्थली** को स्वावलम्बी बनाएं और
पुस्तक प्रेम की हमारी सांस्कृतिक परम्परा का परिचय दें।

सदस्यता शुल्क विवरण		
	पाँच वर्ष के लिए	1000 रुपये
	आजीवन	2500 रुपये
	संरक्षक सदस्यता	5100 रुपये

महावीर माली, राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति, श्रीडूंगरगढ़ (राज.)
खातर महर्षि प्रिण्टर्स, श्रीडूंगरगढ़ में छपी

राजस्थली लेन-देन सारु :
खाता नांव : RAJASTHALI
बैंक : बैंक ऑफ इंडिया, श्रीडूँगरगढ़
खाता सं. : 746210110001995
IFSC : BKID 0007462

Website : http://rbhpsdungargarh.com